तित्थयर

॥ जैन भवन ॥

बर्द्धमान महावीर माता त्रिशला की गोद में

महावीर जन्म कल्याणक विशेषांक

वर्ष : २७ अंक : २ मई २००३

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कमास्त्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

卐

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Ground-nut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 261001 (U.P.)
Ph: 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax: 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Kol - 700 007
Ph: 238-4329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph: 2201001/9146/5055
Telex: 217149 SOIN IN
FAX: 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २७ अंक - २, मई २००३

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone : 2268-2655, e-mail : jbhawan@cal3.vsnl.net.in

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three years : Rs. 160.00, US$ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 2268-2655
and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Kolkata - 700 006 Phone : 2241-1006

संपादन

श्रीमती लता बोथरा

॥ जैन भवन ॥

Jainology and Prakrit Research Institute

Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007.

Phone-2238-2655. e-mail - jbhawan@cal3.vsnl.net.in.

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	जैन धर्म और पर्यावरण-सन्तुलन	पं० मुनिश्री नेमिचन्द्रजी महाराज	८३
२.	कर्म की कहानी	पन्यासप्रवर श्री सुयश मुनि जी	८८
३.	श्री चन्द्रराज चरित्र		१००
४.	समाचार सार		११३
५.	संकलन		११६

कवरपृष्ठ : स्वर्गीय हीराचन्द दुगड़ द्वारा चित्रित एवं श्री जयन्त दूगड़ के सहयोग से प्राप्त चित्र में भगवान् महावीर माता त्रिशला की गोद में।

Composed by:
Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

जैनधर्म और पर्यावरण-सन्तुलन

(पं० मुनिश्री नेमिचन्द्रजी महाराज,)

असन्तुलन का कारण : प्रकृति की व्यवस्था में हस्तक्षेप

अनादि काल से सारा संसार जड़ और चेतन के आधार पर चल रहा है। प्रकृति अपने तालबद्ध तरीके से चलती है। दिन और रात तथा वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमन्त और शिशिर, ये छहऋतुएं एक के बाद एक क्रमशः समय पर आती हैं, और चली जाती हैं। गर्मी के बाद वर्षा और वर्षा के बाद सर्दी न आए तो संसार का सन्तुलन बिगड़ जाता है, जनता में हाहाकार मच जाता है। प्रकृतिजन्य तमाम वस्तुएँ अपने नियमों के अनुसार चलती हैं, तभी संसार में सुखशान्ति और अमनचैन रहता है। परन्तु मनुष्य एक ऐसा प्राणी है, जो प्रकृति की इस व्यवस्था में हस्तक्षेप करता है, प्राकृतिक नियमों को जानताबूझता हुआ भी अपनी अज्ञानतावश उनका उल्लंघन करता है, और अव्यवस्था पैदा करता है। वह वैज्ञानिक प्रगति के नाम पर अथवा अपने असंयम से प्रकृति के इस सहज सन्तुलन को बिगाड़ने का खतरा पैदा करता है। इसी के फलस्वरूप कहीं अतिवृष्टि, कहीं बाढ़ और कहीं भूकम्प, तो कहीं तूफान और सूखा, ये सब प्राकृतिक प्रकोप पैदा होते हैं, इससे प्रकृति का जो सहज पर्यावरण है, उसका सन्तुलन बिगड़ जाता हैं, इन सब प्राकृतिक प्रकोपों के कारण लाखों आदमी काल के गाल में जाते हैं, लाखों बेघरबार हो जाते हैं, हजारों मनुष्य पराधीन और अभाव पीड़ित होकर जीते हैं। यह सारी विषमता और अव्यवस्था मनुष्य के द्वारा प्रकृति के साथ छेड़छाड़ करने के परिणाम-स्वरूप पैदा होती है। कभी तो वह समुद्र में बम-विस्फोट करता है, कभी जहरीली गैस छोड़कर अपनी ही जाति का सफाया करने पर उतारू हो जाता है। कभी उसके द्वारा उपग्रह छोड़ने के भयंकर प्रयोगों के कारण अतिवृष्टि, आँधी, तूफान या भूस्खलन आदि प्राकृतिक प्रकोप होते हैं।

प्रत्येक तीर्थंकर ने जीव-अजीव दोनों पर संयम की प्रेरणा दी

जैन धर्म के युगादि-तीर्थंकर ऋषभदेव से लेकर अन्तिम तीर्थंकर भगवान् महावीर तक सबने प्रकृति के साथ संतुलन रखने हेतु तथा पृथ्वीकायिक

आदि समस्त जीवों के साथ परस्पर उपकार करने हेतु संयम का उपदेश दिया है। उन्होंने जैसे जीवकाय के प्रति संयम रखने की प्रेरणा दी है, वैसे अजीवकाय (जड़ प्रकृतिजन्य वस्तुओं या पुद्गलों) के प्रति भी संयम रखने की खास प्रेरणा दी है।*

परन्तु वर्तमान युग का अधिकांश मानव-समूह इस तथ्य को नजर अंदाज करके जीवकाय और अजीवकाय दोनों प्रकार के पर्यावरण-सन्तुलन के लिये उपयोगी सजीव-निर्जीव पदार्थों के प्रति अधिकाधिक असंयम करके, अन्धाधुंध रूप से सन्तुलन बिगाड़ने का पराक्रम करके प्रदूषण फैला रहा है। अमरीकी राष्ट्रीय विज्ञान एकादमी (१९६६) के अनुसार—वायु, पानी, मिट्टी, पेड़-पौधे और जानवर सभी मिल कर सुन्दर पर्यावरण या स्वच्छ वातावरण की रचना करते हैं। ये सभी घटक पारस्परिक सन्तुलन बनाये रखने के लिये एक दूसरे को प्रभावित करते हैं, जिसे परिस्थिति-विज्ञान सम्बन्धी सन्तुलन कहते है। जब (भौतिक) विकास के लिये प्रकृति का सीमा से अधिक उपयोग किया जाता है, तब हमारे पर्यावरण या वातावरण में कुछ परिवर्तन होता है। यदि इन परिवर्तनों की प्रक्रिया का प्रकृति के साथ सामंजस्य नहीं बिठाया जाता और परिस्थिति-विज्ञान-सम्बन्धी सन्तुलन कायम नहीं रखा जाता तो उससे न केवल विकास व्यय (विकास कार्य में समय, शक्ति और नैतिकता के अपव्यय) के बढ़ने का खतरा पैदा होता है, बल्कि उससे ऐसा असन्तुलन पैदा हो सकता है, जिससे पृथ्वी पर मनुष्य-जाति का जीवन खतरे में पड़ सकता है। इसी प्रकार का असन्तुलन प्रदूषण फैलाता है।

प्रकृति और जीवों के साथ मनुष्य का सम्बन्ध

यह एक निश्चित तथ्य है कि प्राकृतिक पदार्थों तथा जिनमें जीवन का अस्तित्व है, चेतना है, ऐसे सजीव पदार्थों का मानव-जीवन के साथ गहरा सम्बन्ध है। जिस प्रकार भगवद् गीता में कहा गया है[२]— **'परस्पर भावयन्तः श्रेयः परमावारयण'** सभी सजीव-निर्जीव पदार्थ परस्पर एक दूसरे के साथ

---

* जीवकाय-संजमे, अजीव-काय संजमे य—स्थानांग;

२. भगवद्गीता, ३/४

आत्मीयभाव अथवा अपने जीवन के लिये सहायक मानकर चलेंगे तो परमश्रेय को प्राप्त करेंगे। इसी प्रकार जैनाचार्य उमास्वातिने भी तत्वार्थसूत्र में कहा—**परस्परोपग्रहो जीवानाम्**[१] जीवों का स्वभाव परस्पर एक दूसरे पर उपग्रह उपकार करना चाहिये। यही कारण है कि जैनधर्म के अन्तिम तीर्थंकर भगवान् महावीर ने कहा— **'धम्मं चरमाणस्य पंच-निस्सा ठाणा पण्णत्ता, तंजहा-छकाए, गणे, राया, गहवइ, सरीरं**[२]' जो व्यक्ति आध्यात्मिक धर्म का आचरण (साधना) करना चाहता है उसके लिये निम्नोक्त पाँच स्थानों का आश्रय (आलम्बन) लेना बताया गया है। जैसे कि—षट्कायिक जीव, गण, शासक, गृहपति और शरीर। इस सूत्र में छह काया के जीवों (अर्थात्—एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक के समस्त जीवों) के आश्रय को प्राथमिकता दी गई है। दूसरे दर्शन या धर्म जहाँ पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु और वनस्पति में जीवन का अस्तित्व प्रायः स्वीकार नहीं करते, वहाँ जैन धर्म ने पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और वनस्पति में भी जीवन का अस्तित्व स्वीकार किया है। आज का जीव-विज्ञान (जिऑलॉजी) भी इस निष्कर्ष से सहमत हो चुका है कि पृथ्वी, जल और वनस्पति में भी जीवन है, उनमें भी सुषुप्त चेतना है, वे भी हर्ष-शोक का अनुभव करते हैं। जैन-आगमों में तो पृथ्वी-काय, जलकाय, अग्निकाय, वायुकाय और वनस्पतिकाय, इन पाँच स्थावर-जीवों के बारें में बहुत विस्तार से निरूपण किया गया है। वे जीव कहाँ-कहाँ रहते हैं? उनका शरीर किस-किस प्रकार का है? वे कैसे-कैसे श्वासोच्छ्वास, आहार आदि ग्रहण करते हैं? उनका विकास-ह्रास कैसे-कैसे होता है? उनकी उत्कष्ट आयु कितनी-कितनी है? उनमें कितनी इन्द्रियाँ है? कितने प्राण हैं? इत्यादि सभी प्रश्नों पर बहुत गहराई से विचार प्रस्तुत किया है। साथ ही उनके साथ मानव-जीवन का परस्पर उपकार और गहन सम्बन्ध भी बताया गया है। जिसे आगम के उद्धरण द्वारा प्रस्तुत किया गया है। प्रो० सी० एन० वकील ने अपनी पुस्तक—इकोनॉमिक्स ऑफ काऊ प्रोटेक्शन में बताया है—हमें यह कभी न भूलना चाहिये कि मिट्टी, वनस्पति, पशु और मानव का परस्पर गहरा सम्बन्ध है। जिस प्रकार मानव में जीवन है पशु और वृक्ष आदि सजीव हैं, उसी प्रकार

---

१. तत्वार्थ सूत्र, ५ / २१

२. स्थानांगसूत्र, स्थान-५ / सूत्र ४४७

मिट्टी भी सजीव है। सुनने में यह बात भले ही अजीब लगे, पर अक्षरशः सत्य है। कोटि-कोटि अतिसूक्ष्म ऑर्गेनिज्म मिट्टी में क्रियारत रहते हैं।

सत्रह प्रकार का संयम : प्रदूषण-निवारणार्थ

भगवान् महावीर ने जीव और अजीव दोनों प्रकार के पदार्थों के प्रति १७ प्रकार के संयम बताए हैं। वे इस प्रकार हैं—(१) पृथ्वीकाय-संयम, (२) अप्काय-संयम, (३) तेजस्काय-संयम, (४) वायुकाय-संयम, (५) वनस्पतिकाय-संयम, (६) द्वीन्द्रिय (जीव) संयम, (७) त्रीन्द्रिय-संयम, (८) चतुरिन्द्रिय-संयम, (९) पंचेन्द्रिय-संयम (१०) अजीवकाय-संयम (११) प्रेक्षासंयम, (१२) उपेक्षा-संयम (१३) अत्पहत्य-संयम, (१४) प्रमार्जना-संयम, (१५) मनः-संयम, (१६) वचन-संयम और (१७) काय-संयम। इन १७ प्रकार के संयमों का अर्थ ही पृथ्वी-काय आदि ९ प्रकार के जीवों के प्रति संयम रखना, उन जीवों को कष्ट हो, त्रास हो ऐसी प्रवृत्ति न करना है। अजीव-काय-संयम में प्रकृति के प्रति पदार्थों के प्रति संयम प्रेरणा है। प्रेक्षा, उपेक्षा, अपहत्य एवं प्रमार्जनारूप संयम में प्रत्येक प्रवत्ति करते समय देखें, पूर्वापर का, परिणाम का विचार करे, जहाँ या जिस स्थान में अथवा जिस प्रवृत्ति से जीवहिंसा अधिक हो, जिससे अपने स्वास्थ्य, परिवार, संघ, राष्ट्र या समाज की हानि हो, उस प्रवृत्ति के प्रति उपेक्षा करे, जहाँ खींचना, खोदना, रगड़ना आदि घर्षण-प्रवृत्ति हो, वहाँ भी संयम रखे, ताकि किसी जीव को पीड़ा न हो। मन से दूसरों को मारने, सताने, उत्पीड़न करने का विचार न करे, वचन से भी श्राप आदि या क्रोधादिपूर्वक आघातजनक वचन न बोले, न ही काया से अंगोपांगों से किसी पर प्रहार करने आदि हिंसाजनक कृत्यचेष्टा करे। यह १७ प्रकार का संयम है।

पृथ्वी की हिंसा : पर्यावरण-असंतुलन तथा विनाश का हेतु

आज विभिन्न प्रकार के खनिज पदार्थों के लिये खासकर पत्थर के कोयलों के जलाने से, उनकी धूल, कार्बन डाइऑक्साईड, सल्फरडाई-ऑक्साईड

---

* पुढवीकाय-संजमे आनुकाय-संजमे, तेउकाय-संजमे, वायुकाय-संजमे, वाणस्सइकाय-संजमे, बेइंदिय-संजमे, तेइंदिय संजमे, चऊरिंदिय-संजमे, पंचिदिय-संजमे, अजीवकाय-संजमे, पेहा-संजपे, उवेहा-संजमे, अवहट्टु-संजमे, पमज्जपण-संजमे, मण-संजमे, वइ-संजमे, काय-संजमे।

तथा कुछ ऑर्गनिक गैसों के रूप में प्रदूषणकारी पदार्थों की भरमार हो गई है। इस प्रकार बारूदों के द्वारा जमीन में विस्फोट किया जाता है, जिसके कारण वह जमीन नीचे धसती जाती है। कहीं इसी के फलस्वरूप भूकम्प, नदियों में बाढ़, तूफान, समुद्र में मछलियों का मर जाना, धरती का खराब हो जाना आदि प्रकोप हो जाते हैं। इस सब दुष्कृत्यों से दूर रहने के लिये भगवान् महावीर ने आज से लगभग ढाई हजार वर्ष पहले सद्गृहस्थों के लिये स्फोटकर्म (फोड़ीकम्मे) यानी जमीन में विस्फोट करने के खरकर्म का सर्वथा (तीन करण करना, कराना और अनुमोदन-रूप से, तथा तीन योग मनवचन-काया से) निषेध किया था। इसी तरह पृथ्वीकायिक (पृथ्वी जिसका शरीर है, उन) जीवों की (नष्ट करने, गहरे खोदने, फोड़ने आदि के रूप में) हिंसा का निषेध करते हुए कहा था-मेधावी पुरुष हिंसा के दुष्परिणाम को जान कर स्वयं पृथ्वी-शस्त्र का समारम्भ न करे, न ही दूसरों से उसका समारम्भ (घात कराए और न समारम्भ करने वाले का अनुमोदन करे।[१] मनुष्य पृथ्वीकायिक जीवों की हिंसा के साथ केवल मनुष्यों की ही नहीं, अन्य अनेक तद श्रित या तत्सम्बन्धित प्राणियों की हिंसा करता है। अतः पृथ्वीकायिक हिंसा से मानहानि की ओर इंगित करते हुए उन्होंने कहा था-नाना-प्रकार के शस्त्रों (द्रव्यशस्त्रों तथा भावशस्त्रों से) पृथ्वी-सम्बन्धी हिंसाजन्य-कर्म में व्याप्त होकर पृथ्वीकायिक जीवों की हिंसा करने वाला व्यक्ति (न केवल उन पृथ्वीकायिक जीवों की हिंसा करता है, अपितु) अन्य अनेक प्रकार के जीवों की भी हिंसा करता है।[२] यह ध्यान रहे कि जैन-धर्म जहाँ प्राणिमात्र की दृष्टि से प्राणि-विनाश और जीवसृष्टि की मानहानि की दृष्टि से अहिंसा और संयम पर विचार प्रस्तुत करता है, वहाँ विज्ञान उस पर प्रदूषण एवं प्राणिजगत् के लिए दुःखवृद्धि तथा केवल मनुष्य-मात्र की दृष्टि से विचार करता है। किन्तु परिणाम की दृष्टि से दोनों अन्ततोगत्वा एक ही निष्कर्ष पर पहुँचते है।

क्रमशः

---

१. तं परिण्णाय मेहावी नेव संय पुढवि-सत्थं समारंभेज्जा, नेवन्नेहिं पुढवि-सत्थं समारंभावेज्जा, नेवण्णेहिं पुढवि-सत्थं समारंभते समणुजाणेज्जा।
—आचारांग सूत्र १ / १ / ३४

२. जमिणं विरुवरुवेहिं सत्थेहिं पुढवि-कम्म-समारंभेणं, पुढवि-सत्थं समारंभेमाणे अण्णेवऽणेगरुवे पाणे विहिंसई।
—आचारांग सूत्र १ / १ / ३४

कर्म की कहानी

पन्यासप्रवर श्री सुयश मुनि जी

इससे जीभ की लोलुपता बढ़ती है। निश्चित होने पर गुरु के लिये आरम्भ-समारंभ कर खाद्य पदार्थ तैयार करने की संभावना रहती है। निमन्त्रण पर बारम्बार भक्त के घर जाने पर दुर्भावना बढ़ने की संभावना। स्नेह बन्धन बढ़ने की संभावना। निश्चित स्वीकृति देने पर किसी कारण से दाता या ग्रहक में अनियमितता होने पर शत्रुता, राग-द्वेष का कारण। अन्य भाविकवर्ग की उपेक्षा आदि अनेक कारण होने की संभावना बढ़ जाती है।

एक मुनि को भोजन आमन्त्रण पर स्वीकृति देकर फिर किसी संयोग से अव्यवस्था के कारण भयंकर परिणाम दर्शाती एक घटना।

अग्नि शर्मा नामक एक तापस थे। वे मास क्षमण के बाद एक दिन भोजन करके फिर मास क्षमण (एक महिने का उपवास) करते थे। किसी भक्त के आमन्त्रण पर मात्र एक ही घर पर भोजन ग्रहण करते थे। किसी कारण से उस घर पर भोजन नही मिलने पर अगले महिने का उपवास चालू कर देते थे। तापस की महिमा सम्पूर्ण राज्य में फैल गई। राजमहल तक बात पहुँची। राजा तापस के त्याग से प्रभावित होकर अपने राजमहल में पारणा करने के लिए स्वयं तपस्वी को आमन्त्रण देकर आये। निश्चित दिन में तापस राजमहल में पारणा के लिये आये। उस दिन संयोग से राजा बीमार पड़ गये थे। राजा को असह्य शिर दर्द हो रहा था। सभी राज कर्मचारी उसी में व्यस्त थे। किसी ने भी मुनि का सत्कार नहीं किया। मुनि वापस अपने स्थान में लौट आये, और अपने नियमानुसार अगले एक महीने के लिए तप चालू कर दिया। राजा स्वस्थ होने पर मुनि के पास जाकर अपनी गल्ती की क्षमा मांगे और आगे ऐसा नहीं होगा ऐसा विश्वास दिलाये। साथ-साथ अगली बार पारणा के लिए आने की प्रार्थना किया। तपस्वी ने स्वीकार कर लिया। राजा महल में आकर सभी कर्मचारी को सूचना दे दिये कि इसबार तपस्वी को

सम्मान पूर्वक राजमहल में बुलाकर भोजन करावे। संयोग से दूसरी बार तापस के पारणे के दिन ही राजकुमार का जन्म हुआ। राजकुमार के जन्मोत्सव में सभी व्यस्त हो गये। राज महल में आनन्दोत्सव में सभी मस्त हो गये। तापस आया और चला गया किसी ने उनका स्वागत नहीं किया ना ही भोजन कराया। तापस आया और लौट गया, अपने नियमानुसार अगले महीने की तपस्या प्रारंभ कर दी। इस बार उनका ३ महिने का लगातार का उपवास था। तापस के लौट जाने पर राजा को पता लगा। सब कुछ छोड़कर तपस्वी के पास गये, क्षमा मांगे। अबकी बार कोई भी हालत में गलती नहीं होगी ऐसा वचन देकर पुनः आमन्त्रण देकर राजा लौट आये। तीसरी बार तापस पारणा करने राजमहल की ओर प्रस्थान किये। पर राजमहल में परिस्थिति कुछ और ही थी। कोई पड़ोसी राज्य से युद्ध की तैयारी चल रही थी। सभी उसीमें व्यस्त थे। तापस गया और तीसरी बार भी पारणा किये बिना लौट आया। तापस की समता की भी एक सीमा थी। आज चार महिना उन्हें भोजन नहीं मिला था। तापस सभी मर्यादा भूल गये। मन ही मन सोचने लगे कि यह सब मुझे अपमानित करने का नियोजन-आयोजन है। अब तो इसका बदला लेकर ही रहूंगा। तापस ने कोपायमान होकर अनशन करके देह त्याग कर दिया। नव-नव जन्म तक वह राजा गुणसेन के शत्रु बने रहे। इसलिये जैन शासन में जैन मुनि को निश्चित आमंत्रण स्वीकारने का निषेध किया गया है।

प्रसंगोपात और एक शब्द याद आ रहा है। जैन मुनि जब देह-त्याग करते है मृत्यु प्राप्त करते है तब मृत्यु, स्वर्गवास न कहकर कालधर्म कहा जाता है। अर्थात काल-आयुष्य पूर्ण होने पर काल के निर्देशानुसार या कालधर्मानुसार आत्मा एक शरीर को त्याग करके अन्य शरीर को धारण किया है। आत्मा अजर-अमर है उसकी कभी भी जन्म या मृत्यु नहीं होती है।

अब्भुट्ठिओ सूत्र

शास्त्रीय नाम– गुरू खामना सूत्र।

लौकिक प्रचलित नाम- अब्भुट्ठिओ सूत्र।

विषय–गुरुदेव के पास गुरु निमित्त हुआ अपराधी की क्षमा याचना। खमासमण सूत्र द्वारा गुरुदेव को लघुवन्दन किया गया। इच्छकार

सूत्र द्वारा क्षेम कुशल पूछा गया और आहार-पानी ग्रहण करने के लिए विनती की गयी है। अब उक्त अब्भुट्ठिओ सूत्र द्वारा अविनय अपराध की क्षमा यांचना करनी है।

अरिहंत परमात्मा वर्तमान समय में इस भारत क्षेत्र में विद्यमान नहीं है। सिद्धात्मा भी मोक्ष में विराजमान है। हमारे बीच परमोपकारी जीवनवन्त एक मात्र गुरुदेव ही विद्यमान है। वही एक मात्र निराधार के आधार है। मोक्षमार्ग के सारथी है। उन्मार्ग से बचाकर सन्मार्ग में ले जाने का निर्देशन कर रहे है। इस दुषम काल में इस संसार में इनके शरण के बिना और कोई दूसरा उपाय नहीं है। इनके सहवास में रहते हुए जानते-अजानते अगर कोई भूल-अविवेक हो गया हो तो उक्त सूत्र द्वारा विनम्रभाव से क्षमा मांगते है। क्षमा मांगने की यह एक विशेष प्रक्रिया है जिससे स्वयं को अतिलघु बनाकर चरणों में समर्पित किया जाता है। वह है सूत्र का एक अंश 'तुब्भे जाणह अहं न जाणामि' अर्थात आपही सब कुछ जानते है, मैं तो अज्ञानी हूँ, कुछ भी नहीं जानता हूँ। इस प्रकार गुरू चरणों में प्रायश्चित को अपार महत्त्व दिया गया है।

धर्मरत्न प्रकरण में कहा है—

गुरूपद सेवा निरओ, गुरू आराहणंमि तल्लिच्छो।

चरणभर धरण सत्तो, होइ जइ अन्नहा नियम।।

गुरुदेव के चरण सेवा में जो लीन है। आज्ञा पालन में जो तत्पर है, वही मुनि चारित्र पालन करने में सक्षम है।

मूल सूत्र—इच्छाकारेण संदिसह भगवन्!

अब्भुट्ठिओमि अब्भिन्तर देवसिअं/राइअं खामेउं।

इच्छं, खामेमि देवसिअं/राइअं।

जंकिंचि अपत्तियं परपत्तिअं, भत्ते, पाणे, विणये वेयावच्चे,आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे, अन्तरभासाये, उवरिभासाये,

जंकिंचि मज्झ विणय परिहिणं, सुहूमं वा बायरं वा, तुब्भे जाणह अहं न जाणामि तस्स मिच्छामि दुक्कडं।।

इस सूत्र में देवसिअं। राइअं शब्द का दो बार प्रयोग किया गया है। दिनके बारह बजे तक राइअं शब्द का प्रयोग करे। दिन के बारह बजे के बाद

देवसिअं शब्द का प्रयोग करें। कोई पदवी धारी गुरु महाराज हो तो इच्छकार के बाद एक खमासमण देकर अब्भुट्ठिओ बोले। सामान्य मुनि को वन्दन करते समय इच्छकार बोलकर अब्भुट्ठिओ सूत्र बोले।

शब्दार्थ :—

इच्छाकारेण	-	इच्छापूर्वक।
संदिसह	-	आदेश देवे।
भगवन्	-	हे गुरू भगवन्त।
अब्भुट्ठिओमि	-	मैं तैयार हूँ।
अब्भिन्तर	-	भीतर का।
देवसिअं	-	दिवस विषयक।
राइअं	-	रात्रि विषयक।
खामेउं	-	मैं इच्छा करता हूँ।
खामेमि	-	क्षमा चाहता हूँ।
जंकिंचि	-	जो कुछ भी।
अपत्तिअं	-	अप्रीति कारक।
परपत्तिअं	-	अत्यन्त अप्रीति कारक।
भत्ते	-	आहार विषयक।
पाणे	-	पानी विषयक।
विणये	-	बहुमान, विवेक विषयक।
वेयावच्चे	-	सेवा, शुश्रुषा विषयक।
आलावे	-	साधारण वार्तालाप में।
संलावे	-	विशेष वार्तालाप में।
उच्चासणे	-	ऊँचे आसन पर बैठने में।
समासणे	-	एक आसन में बैठने पर।
अन्तर भासाये	-	बीच बोलने पर।
उवरि भासाये	-	अधिक बोलने पर।
मज्झ	-	मेरे से।
विनय परिहिणं	-	अविनय पूर्वक।

सुहुमं - छोटा। बायरं - बड़ा। वा - अथवा।
तुब्भे - आप। जाणह - जाने।
अहं - मैं। न - नही।
जाणामि - जानता हूँ। तस्स - उसका।
मिच्छा - नष्ट हो - मिथ्या हो।
मि - मेरा। दुक्कडं - पाप।
भावार्थ :—

हे कृपावन्त गुरू भगवन्त! आपकी इच्छा हो तो मुझे आज्ञा दे।

दिन या रात्रि विषयक मेरे से आपके विषय में जो-जो भूले हुई हैं, वे सब की क्षमा मांगने के लिए उपस्थित हुआ हूँ। तब गुरुदेव बोलेगें **'खामेह'** क्षमा चाह ले। आपकी आज्ञानुसार क्षमा मांगने की क्रिया करता हूँ। जो कोई अप्रीतिकर, विशेष अप्रीति कारक कार्य किया हो, भोजन, पानी, विनय, सेवा, सामान्य या विशेष बातचीत में, उच्चासन, एकासन में बैठने में, बीच में बोलने में, अधिक चतुराई करने में और भी अन्य कोई मेरे से असभ्य आचरण छोटा या बड़ा हुआ हो, वे सब आप जाने। मैं नहीं जानता अर्थात मेरे मन से तो मैं कुछ भी अपराध नहीं किया हूँ। फिर भी अगर कोई अपराध हो गया हो तो, मेरा पाप मिथ्या हो, नष्ट हो।

विवेचन— जैन शासन में रत्नत्रयी और तत्वत्रयी को अत्याधिक महत्व दिया गया है। इन सभी तत्वों में सबसे महत्वपूर्ण तत्व है गुरुतत्व। क्यों कि इनके द्वारा ही अन्य सभी तत्त्व को पहचाना जाता है। सम्यग् ज्ञान, सम्यग् दर्शन, सम्यग् चारित्र को रत्नत्रयी और सुदेव, सुगुरु, सुधर्म को तत्वत्रयी कहते है। संसार की असारता को समझाकर गुरुदेव ही हमें क्रमिक श्रद्धावान, देशव्रतधारी, संसार त्यागी, और अन्त में मोक्ष का अधिकारी बनाते है।

गुरुतत्व विनिश्चय नामक ग्रन्थ में पूज्य महामहोपाध्याय श्री यशोविजयजी गुरू गुणगान में लिखते है।

सिद्धियाँ गुरू कृपा से ही मिलती है, गुरू कृपा से फलती है, और गुरू आज्ञापालन से मोक्ष की प्राप्ति होती है।

जैसे-डॉक्टर, वैद्य शारीरिक रोगों को दवा के द्वारा मिटाते हैं या प्रयत्न करते है, और डॉक्टर के निर्देशानुसार चलने से हम रोगमुक्त होते है, उसी प्रकार भाव, रोग, क्रोधादि गुरुदेव की असीम कृपारूपी दवा से उनके निर्देशानुसार चलने से भावरोग से मुक्त होते हैं। कहते है कि मूर्ख भी गुरूसेवा से पंडित बन जाते हैं। वेद में कहा है कि-एक क्षण की गुरू सेवा सोलह वर्ष प्रभु सेवा से भी बलवान है।

गुरू पद का महत्व बताते हुए अन्य एक कवि ने लिखा है।

गुरू गोविन्द दोनों खड़े, किसके लागूं पाय।
बलिहारी गुरुदेव की, जिने गोविन्द दियो बताय।।

यहाँ परमात्मा और गुरू दोनों एक स्थान पर हो वहाँ गुरू की महिमा इस दोहे में अधिक बताया है, क्यों उन गुरू ने ही परमात्मा का परिचय कराया है। गुरू का अनुसरण करना ही सबसे बड़ी धर्म उपासना साधना है।

गुरू दर्शन के लिए निकले हुए भक्त अगर किसी कारण गुरू के दर्शन न कर पाये तो उनका चरण रज ही मुक्ति का कारण हो सकता है। इसलिए गुरू की अवहेलना, आशातना कभी भी न करें। इनके मन में कष्ट हो ऐसा कोई भी कार्य न करें।

गुरूवंदन विधि- सर्वप्रथम गुरुदेव का दर्शन होते ही मस्तक झुकाकर हाथ जोड़कर **मत्थयेण वन्दामि** बोले, फिर गुरुदेव से कम से कम साढ़ेतीन हाथ और अधिकतम तेरह हाथ दूरी पर खड़ा होकर दोवारा **खमासमण सूत्र बोलें।**

दो पैर के बीच चार अंगुली दूरी एड़ी की ओर तथा उससे भी कुछ कम आगे की ओर रखकर सीधा खड़ा होकर सिर झुकाकर दो हाथ जोड़कर हाथ का कणुइ छाती में स्पर्श कराकर इच्छामि खमासमणो वंदिउं, जावणिज्जाए निसीहिआए ..... तक बोले फिर (मस्तक, दो घुटने, दो हाथ) पाँच अंगों को भूमि पर स्पर्श कराते हुए मत्थयेण वन्दामि बोले। इसी प्रकार दो बार खमासमण देवें। फिर खड़े-खड़े हाथ जोड़कर इच्छक्कार सूत्र बोले। पदवीधारी हो तो इसके बाद फिर एक बार खमासमण देवे। अन्यथा सीधा अब्भुट्ठिओ सूत्र बोले।

इच्छाकारेण..... इच्छं, तक खड़े, खड़े बोले, फिर पंचांग प्रणिपात मुद्रा में सूत्र बोले, इसमें इतना परिवर्तन करे, बाँया हाथ मुँह के पास सीधा रखे तथा दाँया हाथ जमीन में रखें। फिर एक बार खमासमण देकर पच्चक्खान लेवें। **इच्छाकारी भगवन् पखाय करी पच्चक्खान करावे जी** जो भी पच्चक्खान करना हो अपनी इच्छानुसार पच्चक्खान लेवे। सुबह के समय पच्चक्खान विधि करें। अन्य समय यह आदेश न लेवे। अन्त में फिर एक बार आहार-पानी की विनती करके सुखसाता पूछें।

लघु प्रतिक्रमण विधि :—

१. इरियावहिय सूत्र— जीवों की हुई विराधना के लिए क्षमापना मांगने का सूत्र।

२. तस्स उत्तरी सूत्र— क्षमापना के बाद विशेष भावोल्लास पूर्वक विशिष्ट प्रायश्चित की कामना सूत्र।

३. अन्नत्थ सूत्र— काउस्सग्ग विधि का और उसका आगार।

४. लोगस्स सूत्र— पापों को नाश करने के लिए २४ भगवान् का काउस्सग्ग रूप नाम स्मरण फिर शुद्धि के आनन्द में पुनः २४ भगवान् की स्तवना।

कोई भी धार्मिक क्रिया करने से पूर्व पाप का प्रायश्चित करके मन शुद्ध कर लेना उचित हैं क्योंकि अशुद्ध मन से की गई क्रिया फलदायी नहीं होती है। जिसका प्रारंभ शुभ हैं, उसका अन्त भी शुभ है। इसीलिए आत्मा शुद्धि और मन शुद्धि के लिए उक्त लघु प्रतिक्रमण की क्रिया की जाती है।

प्रति—पीछे। क्रमण—चलना—हटना।

अर्थात् हमारे द्वारा जो पापाचरण हुआ है, उसे याद करके पीछे हटना। पापात्मा को नष्ट करके, स्वभाव में स्थापित होना।

प्रतिक्रमण के पाँच प्रकार :—

१. राई प्रतिक्रमण—रात्रि कालीन पापों का प्रायश्चित करने के लिए प्रातः कालीन प्रतिक्रमण को राई प्रतिक्रमण (रात्रि क़ा प्रतिक्रमण) कहते है।

२. देवसी प्रतिक्रमण— दिन सम्बन्धित दुष्कृत्य के प्रायश्चित्त के लिये संध्या कालीन प्रतिक्रमण को (दैवसिक प्रतिक्रमण) देवसी प्रतिक्रमण कहते है।

३. पाक्षिक प्रतिक्रमण– १५ दिन में एकबार होने वाला चातुर्दशीय प्रतिक्रमण को पाक्षिक प्रतिक्रमण कहते है।

४. चातुर्मासिक प्रतिक्रमण– चार महीने में एकबार आसाढ़ शुक्ला चतुर्दशी, कार्तिक शुक्ला चतुर्दशी, फाल्गुन शुक्ला चतुर्दशी को होने वाले प्रतिक्रमण को चातुर्मासिक प्रतिक्रमण कहते है। इन तीन दिनों में पाक्षिक प्रतिक्रमण नहीं किया जाता है।

५. **साम्वत्सरिक** प्रतिक्रमण– भाद्र शुक्ला चतुर्थी के दिन होने वाले प्रतिक्रमण को साम्वत्सरिक प्रतिक्रमण कहते है। लौकिक भाषा में इसको बड़ा प्रतिक्रमण भी कहते है। इस दिन सभी जीवों के साथ क्षमा याचना किया जाता है।

इन सभी में इरियावहियं या सबसे छोटा प्रतिक्रमण है। भूल को स्वीकार करने से ही भूलो का पुनरावर्तन कम होता है या पुनः भूल करने में संकोच होता है।

एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक जोवों के साथ हुई विराधना का प्रतिक्रमण जब तक न हो तब तक अनुष्ठान में भावोल्लास नहीं आता है। संक्लेश भाव से की गई आराधना चित्त को प्रसन्न नहीं कर सकती है। इसीलिए प्रायश्चित द्वारा आत्मा की शुद्धि करना जरूरी है। शास्त्र में १० प्रकार के प्रायश्चित कहे गये है।

(क) आलोचना (ख) प्रतिक्रमण (ग) मिश्र (घ) विवेक (ङ) कायोत्सर्ग (च) तप (छ) छेद (ज) मूल (झ) अनवस्थाप्य (ञ) पारांचित्त।

सर्व प्रथम इरियावहियं सूत्र से जीवादि विराधना का प्रायश्चित करें। फिर तस्स उत्तरी सूत्र द्वारा विशेष शुद्धि करके कायोत्सर्ग का संकल्प सूत्र अन्नत्थ सूत्र द्वारा कायोत्सर्ग का आगार (छूट, मर्यादा) विचार करके कायोत्सर्ग में २४ भगवान् का नाम स्तावना (लोगस्स सूत्र चन्देसु निम्मलयरा तक) संभव न हो तो चार बार नमस्कार महामंत्र का पाठ करके नमो अरिहंताणं बोलकर कायोत्सर्ग पूर्ण करें। प्रगटरूप में २४ भगवान् का स्तावना लोगस्स का पाठ बोले। आगे फिर कोई भी क्रिया चैत्यवंदन, सामायिक, प्रतिक्रमण, देव वंदन आदि चालु करें।

प्रतिक्रमण-प्रायश्चित की ऐसी महिमा है कि अगर व्यक्ति भावपूर्वक यह क्रिया करें, तो क्रिया करते-करते ही आत्मज्ञान की उपलब्धि हो सकती है।

अतिमुक्तक मुनि जिन्हें बाल्यावस्था में गौतमस्वामी को देखकर गोचरी देने की भावना हुई। गोचरी देकर उनके साथ प्रभु महावीर के पास पहुँचते-पहुँचते श्री गौतम स्वामी की वैराग्यमय बातें सुनते सुनते उस बालक को दीक्षा लेने की इच्छा हो गई। गुरू को स्थान पर छोड़कर बालक माता के पास आये और दीक्षा की अनुमति मागें। मातृस्नेह के कारण प्रथम तो माता इन्कार करती रही, पर बालक के दृढ़निश्चय को देखकर माता ने स्वीकृति दे दी। अतिमुक्तक गुरु चरण में जीवन समर्पण करके मुनि बन गये। ज्ञानाभ्यास में तल्लीन हो गये। चातुर्मास का समय आया। एक अन्य मुनि के साथ बाल मुनि शौच क्रिया के लिए बहार भूमि गये। रास्ते में बहते पानी में कुछ बच्चे खेल रहे थे। मुनि भी बालसुलभ बुद्धि के कारण उन बच्चो के साथ खेलने लग गये। अपना काष्टपात्र पानी में डालकर तैराने लगे। काष्टपात्र को तैरता हुआ देखकर मुनि आनन्दित होकर नाचने लगे और कहने लगे.....मेरी नाव तर गई, मेरी नाव तर गई। इतने में अन्य मुनि भी वहाँ आ पहुँचे। इस दृश्य को देखकर मुनि बोले..... बालमुने! हम साधु है, कच्चा पानी छूना भी हमारे लिये अनुचित है। बालमुनि तुरन्त अपना पात्र लेकर, अन्य मुनि के साथ उपाश्रय में चले आये। मन में पश्चाताप हुआ। स्थान पर आकर इरियावहियं करते-करते ऐसे भाव में चढ़ गये कि वहीं उन्हें आत्मा की परमोत्कृष्ट अवस्था केवलज्ञान की प्राप्ति हो गई। अर्थात इरियावहियं सूत्र द्वारा प्रतिक्रमण करते-करते आज के पाप को ही नही, श्रेणी पर चढ़कर अनेक जन्म का पाप नाश कर दिये। ये है महिमा सूत्र और प्रतिक्रमण की।

शास्त्र में कहा है कि–५०० धनुष प्रमाणा २८ हजार जिन प्रतिमा तैयार कराने में जो पुण्य होता है, उतना ही पुण्य का उपार्जन एक बार लघु प्रतिक्रमण (इरियावहियं) भाव पूर्वक करने से होता है।

इरियावहियं सूत्र– धर्म का प्रारंभ अन्य के प्रति शुभ विचार प्रवाह से होता है। जीव मात्र के प्रति मैत्री भाव धर्म का मूल है। जिनको सिद्ध होना है उंनको सभी जीवों को मित्र बनाना ही पड़ेगा। स्नेह का प्रवाह जीवात्मा को परमात्मा बनाता है। जीवों के प्रति तिरस्कार धार्मिक क्रिया में बाधक बनता है, मन को अप्रसन्न कर देता है। एक सनातन सत्य नियम है कि चित्त की प्रसन्नता बिना धर्म क्रिया व्यर्थ है। शास्त्र में भी कहा है 'मनः प्रसन्नतामेति पूज्यमाने जिनेश्वर' अर्थात् मन की

प्रसन्नता ही प्रभु की पूजा है। सभी जीवों का उचित बहुमान करें। छोटे से छोटे जीव में भी परमात्मा का स्वरूप रहा हुआ है।

आप किसी के प्रति दुर्भाव रखेगें तो आपके प्रतिभी कोई दुर्भाव रखेगा। आप किसी को दुःख देगें, परेशान करेगें तो आपको भी कोई दुःख देगा, परेशान करेगा। इसी की परम्परा जीव के लिए क्लेश का कारण है। अन्य का अनिष्ट चिन्तक अन्य का अनिष्ट कर सके या नही अपना तो अनिष्ट कर ही लेता है। ऐसी दुष्ट प्रवृत्ति मन को क्लिष्ट बना देती है, फिर उसके लिए धर्म अरुचिकर हो जाता है।

शास्त्रीय नाम–ऐर्यापथिकी सूत्र।

लौकिक नाम–इरियावहि सूत्र।

विषय–चलते-फिरते हुए हिंसा स्वरूप समस्त जीवों से क्षमा याचना।

सारांश–जीव मात्र में प्रेम रखे। किसी के प्रति दुर्भाव या धिक्कार का भाव न रखें। सबसे क्षमा मांगे व सभी को क्षमा प्रदान करें। मन में रहा हुआ दुर्भाव भी मानसिक जीव हिंसा का ही एक प्रकार है। सभी के साथ मैत्री भाव रहे। थोड़ी भी भूल हो जाय तो तुरन्त क्षमा मांग लेवे। क्योंकि प्रायश्चित्त के बिना धर्म का प्रारंभ हो नहीं सकता है।

मूल सूत्र—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ।
इरियावहियं पडिक्कमामि, इच्छं,
इच्छामि पडिक्कमिउं ।।१।।
इरियावहियाए, विराहणाए ।।२।।
गंमणा गमणे ।।३।।
पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे,
ओसा-उत्तिंग-पणग-दग,
मट्टी-मक्कड़ा-संत्ताण-संकमणे ।।४।।
जे मे जीवा विराहिया ।।५।।
एगिंदिया, बेइंदिया,
तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया ।।६।।
अभिहया, बत्तिया, लेसिया,

संघाइया, संघट्टिया, परियाविया,
किलामिया, उद्दविया,
ठाणाओ ठाणं, संकामिया,
जीवियाओ ववरोविया,
तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।।७।।

शब्दार्थ–

इच्छाकारेण	-	आपकी इच्छानुसार।
संदिसह	-	आदेश देवे।
भगवन्	-	हे गुरू भगवन्त।
इरियावहियं	-	एर्यापथिकी-जाने-आने की क्रिया में होने वाला हिंसादि पाप।
पडिक्कमामि	-	प्रतिक्रमण करता हूँ (गुरू बोले-पडिक्कमेह-प्रतिक्रमण करें)
इच्छं	-	आपकी आज्ञा को स्वीकार करता हूँ।
इच्छामि	-	इच्छा करता हूँ।
पडिक्कमिउं	-	प्रतिक्रमण करने के लिये।
विराहणाये	-	विराधना (विपरीत कार्य) में।
गमणागमणे	-	आने जाने में।
पाणक्कमणे	-	जीवों के ऊपर चलने में।
बीयक्कमणे	-	बीजों के ऊपर चलने में।
हरियक्कमणे	-	हरीवनस्पति दबाकर चलने में।
ओसा	-	ओंस ।
उत्तिंग-चींटी का घर।		
पणग	-	सेंवाल, पंचवर्णी सूक्ष्म जीव।
दगमट्टी	-	कीचड़ (पानी मिट्टी)।
मक्कड़ा संताणा	-	मकड़ी का जाल।
जे	-	कोई। मे - मैं।
विराहिया	-	विराधना कियाहो, दुःख दियाहो।
एगिंदिया	-	एक इन्द्रिय वाला जीव।
बेइंदिया	-	दो इन्द्रिय वाला जीव।

तेइंदिया	-	तीन इन्द्रिय वाला जीव।
चउरिंदिया	-	चार इन्द्रिय वाला जीव।
पंचिंदिया	-	पाँच इन्द्रिय वाला जीव।
अभिहया	-	पैर से मारा हो।
वत्तिया	-	धूल से ढका हो।
लेसिया	-	जमीन पर रगड़ा हो।
संघाइया	-	एक साथ रखा हो।
संघट्टिया	-	परस्पर स्पर्श कराया हो।
परियाविया	-	परेशान किया हो।
किलामिया	-	दुःख दिया हो।
उद्दविया	-	मानसिक कष्ट दिया हो।
ठाणाओ ठाणं	-	एकस्थान से अन्यस्थान में रखा हो,
संकामिया	-	घुमाया हो।
जीवियाओ	-	जीवन से।
ववरोविया	-	नष्ट किया हो।
तस्स	-	उस सम्बन्धित।
मिच्छा	-	मिथ्या हो, नष्ट हो।
मि	-	मेरा ।
दुक्कडं	-	दुष्कृत-पापकर्म।

भावार्थ– हे गुरुदेव! आपकी इच्छानुसार मुझे आज्ञा करें, मैं ईर्यापथिकी प्रतिक्रमण करूं? अर्थात् गमनागमन क्रिया करते हुए जो हिंसादि पाप हुआ है, उसकी क्षमा मांगू? गुरुदेव उस समय आदेश देते है करो। आपकी आज्ञा स्वीकार कर गमनागमन क्रिया में हुई विराधना का प्रतिक्रमण करता हूं।

गमनागमन क्रिया से, बीज को दबाने से, वनस्पति को दबाने से, ओंस चींटी का घर सेंवाल, पानी, कीचड़, मकड़ी का जाल आदि दबाने से। हिंसा हो तो। एकेन्द्रिय, दोइन्द्रिय, तीन इन्द्रिय, चार इन्द्रिय, पाँच इन्द्रिय जीवों को पैर से मारा हो, धूल से ढका हो। पकड़कर घिसा हो, एकत्र किया हो, परेशान किया हो, अंग काटा हो, डराया हो, एक स्थान से अन्य स्थान ले गया हो, मार डाला हो, तो वे सभी मेरा पाप नष्ट कर ले।

क्रमशः

श्रीचन्द्रराजचरित्र

श्रीचन्द्रकुमार ने कहा महात्मन्! आपकी बड़ी कृपा है जो हित शिक्षा के साथ इस दिव्य जड़ी को मुझे दिया। विधि पूर्वक जड़ी को लेकर योगी को नमस्कार कर और आज्ञा पाकर कुमार अपने घर को लौट आया।

इस प्रकार वह कुमार अपने मित्र के साथ रथ के योग से नये-नये स्थानों की यात्रा, महात्माओं के दर्शन, सिद्ध पुरुषों से सिद्धियां, अपूर्व जड़ी बूटी, मणि, मन्त्र, औषधियां प्राप्त करता जाता था। इस तरह बड़े आनन्द और सुख से निश्चिन्त समय बिताने लगा।

वसंत का समय था। आम के वृक्षों पर मंजरियाँ फूट रही थी। उनकी महक चारों ओर फैल रही थी। लाल आँखों वाली कोयलें कषाय कण्ठों से-पंचम स्वर में कुहू कुहू कर रही थी। सारे वन और उपवन ऋतुराज का स्वागत करने के लिये मस्ती में झूमते हुए हरे भरे इठलाते खड़े थे। मकरंद के लोभी भौंरे पुष्पों की प्याली में रखे हुए रस को बार-बार पीकर उन पर मंडरा रहे थे।

श्रीचन्द्र कुमार अपने मित्र के साथ झूला झूल रहा था। मलयाचलकी शीतल मंद और सुगन्धित पवन उनके ललाट से पसीने की बूंदों को पोंछकर उनके वस्त्रों और बालों को हिला रही थी। दोनों दोस्त बड़ी प्रसन्नता से सामने के बड़े झरोखे की राह से एक टक वसंत की शोभा को निहारते थे। इतने में श्रीचन्द्र के मुंह से ये भाव निकलने लगे।

कूलनमें केलिमें कछारनमें कुंजनमें
क्यारिनमें कलिन कलीन किलकंत है।
कहे **पद्माकर** परागनमें पान हू में
पानन में पीक में पलाशन पगंत है।।
द्वार में दिशान में दुनी में देश देशन में
देखो दीप दीपन में दीपत दिगंत है।
वीथिन में ब्रजमें नवेलिन में वेलिनमें
वनन में बागन में बगरो बसन्त है।।

इन भावों को सुनकर गुण चन्द्र भी अपने कों रोक न सका, और बोल उठा—

द्रुमाः सपुष्पाः सलिलं सपद्मं,
स्त्रियः सकामाः पवनः सुगन्धिः।
सुखाः प्रदोषा दिवसाश्च रम्याः,
सर्वं सखे! चारुतरं वसन्ते।।

मित्र! क्या बताऊं? विकसित फूलों वाले पेड़, कमलों से परिपूर्ण जलाशय सकामा स्त्रियां, सुरभित पवन, सुखकारक सायंकाल, और रमणीय दिन अधिक क्या वसंत में सभी सुन्दर हो जाते हैं।

इस प्रकार उनमें परस्पर विनोद वार्तालाप हो रहा था कि अचानक उनके कानों में बाजों की आवाज सुनाई दी। चतुरंगिणी सेना मंत्रियों और सामंतों के साथ जय आदि राजकुमारों को नगर से बाहर जाते देखा। श्रीचन्द्र ने गुणचन्द्र से पूछा कि मित्र! कहो यह किस बात का जलूस है? गुणचन्द्र को इस बात का पहिले से पता था अतः उसने मित्र के प्रश्न का उत्तर विस्तार पूर्वक देना प्रारंभ किया वह बोला—

मित्र! यहां से दक्षिण की ओर तिलकपुर नामका एक नगर है। वहां तिलकसेन नामका राजा राज्य करता है। उसके सुतिलका नाम की पटराणी है। उस महारानी के तिलकमंजरी नाम की कन्या है जो स्त्रियों की चौसठकलाओं में प्रवीण हैं। इस समय वह पूर्ण तरुण अवस्था में होने से पाणिग्रहण के योग्य हो गई है। एक समय उसने राज-सभा में अपनी प्रतिज्ञा प्रकाशित की थी कि जो कोई वीर राधा-वेध करने में समर्थ होगा वही मेरा स्वामी होगा।

राजा तिलकसेन ने उसे विवाह योग्य समझकर स्वयंवर का शुभ मुहूर्त्त निश्चय कर लिया है। राधावेध के आचार्य की देख रेख में शास्त्र की विधि से राधावेध आदि की सारी सामग्री जुटाली है। देश देशान्तरों के राजाओं के पास निमंत्रण-पत्र भेजे गये हैं। अतः उस स्वयंवर में सम्मिलित होने वाले सभी राजा लोग अपने राज्यों से चल कर निश्चित तिथि पर वहां पहुंच जायेंगे। आज से सत्रह दिन बाद राधावेध का मुहूर्त्त है। तिलकपुर यहां से लगभग अस्सी योजन दूर है। ये जयकुमार आदि वहीं पहुंचने को जा रहे हैं।

इस प्रकार दोनों मित्रों को स्वयंवर सम्बन्धी बातचीत करते हुए अचानक आये हुए सेठ लक्ष्मीदत्त ने सुना और गुणचन्द्र को अलग बुलाकर कहा कि पुत्र! तिलकपुर में राधावेध आदि होने वाले हैं। अगर श्रीचन्द्र जाना चाहे तो पूछो।

मित्र ने पिता की इच्छा पुत्र के सामने प्रकट कर दी लेकिन कुमार ने उसका कोई उत्तर नहीं दिया। सोलहवें दिन की संध्या को कुमार ने सारथी को रथ जोतनेकी आज्ञा दी। अपने मित्र को साथ लेकर पिता को बिना पूछे ही वह वायुवेग से तिलकपुर की ओर चला गया। मार्ग में आने वाले पहाड़, जंगल, नदी, नाले आदि सब को पार करता हुआ सुबह होते-होते तिलकपुर के उद्यान में जा पहुँचा। सारथि को रथ सौंप कर, अपने मित्र को साथ ले वह राधावेध मंडप की ओर चला। चारों ओर लोगों के झुंड के झुंड खड़े राधावेध की साधना के सम्बन्ध में तरह-तरह की बातें कर रहे थे। स्थान-स्थान पर आश्चर्यकारी दृश्यों को देखता हुआ वह समित्र स्वयंवर मण्डप में प्रविष्ट हुआ।

योग्य सिंहासनों पर देवताओं की शोभा को हरने वाले राजा लोग विराजमान थे। बीचमें राधावेध स्तम्भ खड़ा था। उस पर शास्त्र सम्मत उल्टे सीधे आठ-आठ चक्र चक्कर काटते थे। उनके बीच में एक मछली लगी हुई थी जिसकी बांयी आंख का तारा राधा कही जाती है। खंभ के पास ही तेल से भरा कडाह रखा था। उसमें घूमते चक्रों के बीच रही राधा का प्रतिबिंब पड़ रहा था। उस खम्भे के पास धनुष बाण रखे हुए थे। कडाह में नीचे परछांई को देखता हुआ उल्टे सीधे चक्रों के बीच की राधा को बाणसे बींधने वाला वीर राधावेध को सिद्ध करनेवाला माना जाता है। श्रीचन्द्र कुमार अपने मित्र को ये सारी बातें समझाकर उचित स्थान पर बैठ गया।

इतने में वहां बाजे बजने लगे। चलो, हटो की आवाजें आने लगी। सब एक तरफ हो गये। सुन्दर वैवाहिक वेश पहिने परिवार के साथ राजकन्या पालकी में बैठकर सभा मण्डप में आई। पालकी से सभ्रान्त भाव से उतर कर हाथों में वरमाला लिये वह खम्भे की जिमणी तरफ आकर खड़ी हो गई। हजारों आंखें एक साथ उस पर आकृष्ट हो गई। उसके सौन्दर्यामृत पान में राजा लोग इतने लीन हो गये कि उनके मन शरीर से बाहर हो गये। सिंहासन पर केवल शरीर मात्र ही रह गये।

श्रीचन्द्र ने मित्र से कहा मित्र! अलौकिक सौंदर्यमयी इस राज-बाला का कहां तक वर्णन करें यह तो–

बिना सूंघा हुआ फूल है। नखों से अछूता यह कोमल पान है। अणवींध रत्न है। बिना चखा हुआ यह नवीन पुष्प रस है। इसका निष्पाप रूप, पुण्यों का मानों अखण्ड फल ही है। न मालूम विधाता किसको इसका भोक्त नियत करेगा? मित्रने जबाव दिया अभी सब कुछ सामने ही आया जाता है।

स्वयंवर मण्डप में श्रीषेण हरिषेण आदि बहुत से राजा और राजकुमार आये हुए थे। तिलकसेन की आज्ञा से वहां के भद्दने उन सूर्यवंशी चन्द्रवंशी राजाओं के नाम पिता वंश जाति देश और पुरादिकों का परिचय कराया। अपनी ओजस्विनी वाणी से उस सबको राधावेध के कार्य में प्रोत्साहित किया। भट्टवाणी से प्रोत्साहित राजा लोग क्रमशः राधावेध के खम्भे के पास आते और उस विधि को न जानने के कारण हंसी के पात्र बन कर चले जाते।

जय आदि राजकुमार भी अपनी अपनी बारी से वहां आये परन्तु लक्ष्य भ्रष्ट रहने के कारण लज्जित और निराश होकर मुंह नीचा किये वहां से हट गये। नरवर्मा राजा ने एक चक्र को तो वींध दिया, पर बाण टूट जाने के कारण वह भी शर्मिन्दा हो गया। शेष बचे काम, पाल, वामांग, शुभगांग का पुत्र श्रीमल्ल वरचन्द्र और दीपचंद्र के पुत्र आदि जो प्रवीण और विचारवान थे वे लोग तो पहले से ही इस कार्य की गुरुता को सोच कर अपने स्थानों पर ही बैठे रहे।

जब दुष्कर कार्य किसी से पूरा न हुआ तो राजा तिलक सेन और उसकी कन्या तथा उसका परिवार और अध्यापक आदि सभी बड़े चिंतित हुए। तब भट्ट ने फिर जोशीली भाषा में कहना शुरु किया–उपस्थित लोगों में क्या कोई वीर नहीं है, जो प्रण को पूरा करके सबको चिंता मुक्त करे? क्या पृथ्वी निर्वीरा हो गई है? क्या राजकन्या को आजन्म क्वाँरी रहना पड़ेगा? ठीक है पृथ्वी वीरों से खाली हो गई है। अब भविष्य में ऐसे कठोर प्रण करने का किसी को साहस नहीं करना चाहिये।

भट्ट की उस तिरस्कार पूर्ण वाणी से श्रीचन्द्रकुमार की वीरता जाग उठी। मित्र की प्रेरणा ने उस उठती आगमें घृत की आहुति का काम किया। वह शीघ्र ही उठ खड़ा हुआ। खंभे के सन्मुख पहुंचा और धनुष टंकार करके

धनुष पर बाण को चढ़ा लिया। शास्त्रोक्त विधि से उसने बाण चला कर सबके देखते-देखते लक्ष्य भूत राधा को वींध दिया। चारों ओर जय जय ध्वनि से आकाश गूंज उठा। प्रसन्नता से कन्या का परिवार बाँसों उछलने लगा। पुरवासी आनन्दातिरेक से जय चिरंजीव कह कर फूल बरसाने लगे। राज कन्या का मुख उज्जवल हो उठा। उसकी चिंता मिट गई। बड़ी उत्सुकता से आगे बढ़कर उसने कुमार श्रीचन्द्र के गले में वरमाला पहिना दी।

यह कौन है? किसका पुत्र है? इस प्रकार कहते हुए और उसके भाग्य-विद्या-बल-बुद्धि और मन्त्र विधि की प्रशंसा करते हुए राजादि सभी लोग वहां आ उपस्थित हुए, और वहां बड़ीभारी भीड़ और कोलाहल मच गया। भीड़ में अवसर पाकर श्री चन्द्रकुमार अपने मित्र का हाथ पकड़कर अपने रथ के पास आ पहुंचा। मित्रने उसे बहुत समझाया कि मित्र! यहां ठहरो और विवाह करके राजपरिवार और माता-पिता को आनन्दित करो।

मित्र को उत्तर देते हुए श्रीचन्द्रकुमार ने कहा—हे सखे! तुम्हें इस बात का तो पता ही है कि हम पिताजी को सूचित किये बिना ही चुपचाप यहां आये हैं। अतः अब देर मत करो शीघ्र रथ में बैठो। इतना कह उसने मित्र के रथ में बैठ जाने पर घोड़ों की लगाम ढीली कर दी। घोड़े हवा से बाते करने लगे।

इधर बन्दी जनों ने श्रेष्ठी-पुत्र श्रीचन्द्रकुमार को पहचान लिया, और सबके सामने उसके दिव्य चरित को प्रकट कर दिया कि यह—कुशस्थलपुर निवासी सेठ लक्ष्मीदत्त का श्रीचन्द्र नाम का कुमार है। इसके आठ पत्नियां हैं। सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री गुणंधर गुरु के पास सारी विद्यायें पढ़ी है और सारी कलाओं का अभ्यास किया है। इसके पास सुवेग नाम का रथ है जिसमें पवनवेग और महावेग नाम के घोड़े जोते जाते हैं। वह महाराज प्रतापसिंह द्वारा प्रदान दिया गये कण्कोट्टपुर का अधिपति है।

यह सुनकर राजा तिलकसेन ने अपने सिपाहियों को कुमार को खोज लाने की आज्ञा दी। राजाकी आज्ञा को पाकर कई घोड़ो पर और कई रथों पर सवार होकर उसके पीछे दौड़े परन्तु वह उनके हाथ नहीं आया। वहां उपस्थित राजा लोग उसके दुष्कर कार्य की और त्याग की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करने लगे।

भेजे हुए सिपाही खाली हाथ लौट आये। राजा बड़ा दुःखी हुआ। राजकुमारी तिलक मंजरी बेहोश हो गई। होश में आने पर वह इस प्रकार विलाप करने लगी।

हा प्राणनाथ ! आप मुझ अभागिनी को बिना वरण किये ही क्यों चले गये। अगर विवाह की इच्छा न थी तो राधावेश जैसे दुष्कर कार्य को करने का साहस ही क्यों किया?। स्वामिन्! इस प्रकार रोती बिलखती मुझ अबला को अविवाहित अवस्था में ही छोड़ कर चले जाना आप जैसे प्रणपूरकों का धर्म और कर्त्तव्य नहीं है। देव! आपने मुझे किस अपराध पर यह दण्ड दिया है? वायु के वेग से भी अधिक तेज उस रथ से मेरी दृष्टि से ओझल हो गये हो पर मेरे हृदय से आप कभी दूर नहीं हो सकते। हे स्वामिन! जलहीन मछली के समान तड़फती हुई मुझे दर्शन रूप जल से जीवन प्रदान करने की कृपा करिये।

इस प्रकार पत्थरों को भी पिघला देने वाले विलाप करती हुई राजकन्या को उसके पिता और जयकुमार आदि लोगों ने समझा बुझा कर शान्त किया।

जयकुमार ने सबके सामने कहना शुरु किया ओह ! वह तो हमारे नगर का रहने वाला, सेठ लक्ष्मीदत्त का कुमार, हमारे पिता का स्नेहपात्र, कण्कोट्ट का जागीरदार है। उसके लिये अधिक दुःखी मत होओ। यदि राजकुमारी मेरे साथ चले तो हमारे नगर में वह श्रेष्टि कुमार आसानी से मिल सकता है। इसमें अफसोस करने जैसी कोई बात नहीं हैं। आप सब लोग शान्ति रखें। जयकुमार की इस प्रकार आश्वासन भरी बातों से राजा और राजकन्या बड़े ही सन्तुष्ट हुए मानों प्यासे को शीतल जल मिल गया हो।

स्वयंवर में आये हुए राजाओं को, राजकुमारों को हाथी घोड़े और वस्त्राभूषणों से उचित सत्कार करके उनको अपने अपने नगरों की तरफ विदा किये। तिलकमंजरी भी बड़ी सजधज के साथ तैयार हुई। त्यों ही मंत्री ने राजा से प्रार्थना की कि राजन् ! जयकुमार के डेरे से गुप्तचरों द्वारा जो समाचार जानने को मिले हैं मालूम होता है दाल में कुछ काला है। बिना सोचे समझे जय के साथ राजकुमारी को भेजना, खतरे से खाली नहीं ।

मंत्री के इस प्रकार चेतावनी भरे वचन सुनकर राजा तिलकसेन ने राजकुमारी तिलकमंजरी को भेजने का विचार स्थगित कर दिया और अपने धीर नाम के मंत्री को श्रीचन्द्रकुमार को लाने के लिये भेज दिया।

इधर श्रीचन्द्रकुमार मित्र के साथ जल्दी से अपने नगर में पहुँच गया। सेठ लक्ष्मीदत्त उसकी राह में अपनी आंखे बिछाये बैठा था। दूज के चन्द्रमा के जैसे कुमार को घर पर आया देख सेठ ने उसे बड़े प्रेम से स्नेहालिंगन किया। पिता के देरी से आने का कारण पूछने पर इधर उधर के कोई खेल का बहाना बताकर उत्तर को टाल दिया।

कुछ दिनों बाद जयकुमार आदि स्वयंवर से लौट आये। राधावेध आदि की साधना का सारा वृत्तान्त अपने महाराजा को विस्तार पूर्वक कह सुनाया। सुनकर महाराजा ने प्रसन्नता के साथ कहा कि आज मुझे श्रीचंद्र के सफल होने पर उतनी खुशी हुई है जितनी की तुम्हारी सफलता पर होती। आज इसने अपने यश के साथ मेरे नाम को भी देश देशान्तरों में सुप्रसिद्ध कर दिया है। इसने इन सब विद्याओं को कब किस श्रेष्ठ आचार्य से सीखी हैं। छोटी अवस्था वाले इस श्रीचन्द्र कुमार का पौरुष प्रशंसनीय है।

मंत्रिराज श्रीमतिराज ने विनय के साथ महाराज से अर्ज की कि– महाराज ! श्री गुणंधरोपाध्याय ने इस कुमार को कलाएँ सिखाई हैं। यह मेरे भतीजे का दोस्त है। इसका चरित्र सदा एक आश्चर्य रूप में देख रहा हूँ। यह कब तो स्वयंवर में गया और कब वहाँ से लौट आया? कुछ पता नहीं। महाराज ने आश्चर्य करते हुए यह सब जानने के लिये उन पिता पुत्र को आदर के साथ बुलाने का आदेश दिया।

इधर राधावेध की अद्‌भुत बात सुनकर सेठ लक्ष्मीदत्त ने प्यार भरे शब्दों में श्रीचन्द्र से कहा–बेटा बारह प्रहर में तिलकपुर तक जाकर कैसे लौट आये हो ज्यों ही कुमार अपनी यात्रा के बृत्तान्त को सुनाने लगा उसकी माता सेठानी लक्ष्मीवती भी सुनने की इच्छा से वहां आ गई। कुमार कहने लगा–पिताजी! आपकी कृपा से, गुरुदेव के आशीर्वाद से, और पूर्व पुण्यों के प्रभाव से ही मैं ऐसा करने में समर्थ हो सका हूँ। दूसरी बात यह है कि मेरे पास जो घोड़े हैं वे वेग में वायु का भी तिरस्कार करने वाले हैं। वैसा ही सुन्दर सुदृढ़ उनके उपयुक्त रथ है जिसमें बैठकर मैं चार प्रहर में सौ योजन जा सकता हूँ।

उसके वचन सुन प्रसन्न चित्त माता-पिता ने कहा हे हमारे वीर बेटे! तूने राधावेध करके राजकन्या के साथ विवाह कर हमें पूज्य क्यों नहीं

बनाया?। बीच में ही उत्तर देते हुए मित्र गुणचन्द्र ने वरमाला आदि के वृत्तान्त को विस्तार पूर्वक कह कर उन्हें और भी अधिक प्रसन्न किया। आपकी आज्ञा के बिना यह काम संपन्न न हो सका। आज या कल में राजकुमारी या तिलक नरेश का कोई मंत्री आने ही वाला है।

मित्र की बातों को सुन खुश हुए माता-पिता कहते हैं—हमारा यह सौभाग्य है जो ऐसा धीर वीर उदार गुणी पुत्र मिला। राजकन्या जैसे अमूल्य रत्न को बिना ब्याहे आ जाना क्या कुछ कम निस्पृहता है? इस प्रकार पुत्र की प्रशंसा करते हुए घर में भारी महोत्सव करके लोगों में बधाइयाँ बांटी।

सज्जन साधु पुरुषों के सत्संग में, देश-विदेश की लोकोत्तर घटनाओं के दर्शन में, परोपकार करने में, और निष्पाप मनोविनोद की साधना में उत्तम पुरुषों का समय सदा बीतता रहता है।

चरित्र नायक श्री चन्द्रकुमार अपने अभिन्न मित्र श्री गुणचन्द्रकुमार के साथ हमेशा की तरह रथ में बैठ कर क्रीड़ा के लिये पूर्व की ओर एक दिन सायंकाल के समय निकल पड़ा। उनके माता पिता अपने योग्य पुत्र के इस प्रकार के हमेशा के कार्य क्रम को जानते थे अतः चिंता से मुक्त रहा करते थे।

कुमार घर पर नहीं था उस समय महाराजा प्रताप सिंह के मंत्री ने आकर सेठ को संदेश सुनाया कि आपके चिरंजीवी को बड़े आदर के साथ बुलाया है। सेठ ने बड़ी प्रसन्नता से कहा कि कुमार तो क्रीडार्थ गया हुआ है, चलियें मैं ही महाराज की आज्ञा का पालन करता हूं। छंत्र चामर आदि राजकीय लवाजमे से सन्मानित हुए सेठ मंत्रियों के साथ राज-महल में पहुँचे। महाराज ने उनका अनुपम स्वागत करके पूछा सेठ! कहिये आपके कुमार ने किस साधन से ऐसे अद्‌भुत कार्य किये?

सेठने बड़े विनय से उत्तर दिया महाराज! मेरे बेटे के पास न तो कोई यंत्र और न कोई मंत्र न कोई जादू टोना है और न कोई देव की साधना ही। वह तो गुणंधर गुरु के पास सब विद्याओं में पारंगत हो बड़े धीर वीर और साहसी कामों को करता है। उसके पास पवन वेग महावेग नामक के घोड़ों वाला सुवेग नाम का दिव्य रथ है। इसी पर बैठकर वह असंभव कार्यों को संभव कर देता है। मुझे भी इसकी इस अद्‌भुत लीला का पता थोड़े ही दिन

हुए लगा है। ऐसा कहते हुए सेठने तिलकपुर की राधावेध की घटना विस्तार के साथ बड़े रोचक ढ़ंग से कह सुनाई और कहा कि देव! आज भी वह अपने मित्र के साथ वैसी ही कोई क्रीड़ा के लिये रथ में बैठ कर गया है। इसी से आपकी सेवा में वह न आ सका और मुझे उपस्थित होना पड़ा है।

यह सुन महाराजा ने कहा सेठ! तुम्हारा पुत्र बड़ा भाग्य शाली है और लोकोत्तर चरित वाला है। जब वह क्रीड़ा से वापस लौटे तब मुझसे जरूर मिलाना। मैं उसे अपने पुत्रों से भी बढ़कर महत्तम पद प्रदान करना चाहता हूँ। ऐसा कह कर सेठ द्वारा दी हुई भेंट को स्वीकारते हुए महाराज ने सेठ को कुमार के लिये वस्त्रालंकार और जागीर प्रदान की। इस प्रकार महाराजा से सन्मानित हो सेठ जगह-जगह कुमार के गुणगान को सुनता हुआ और याचकों को दान देता हुआ घर लौट आया।

इधर कुमार को रथ में घूमते-घूमते जंगल में आधी रात का समय हो गया। उसे निद्राने आ घेरा। सारथी को रथ खोलने की आज्ञा दी। रथ एक सघन वृक्ष के नीचे खोल दिया गया। मित्र ने शय्या तैयार कर दी। कुमार सो गया। मित्र जागता हुआ पहरा देने लगा। उसी वृक्ष की डाली पर बैठे एक शुक युगल ने कुमार के तेजस्वी चेहरे को देख आपस में बातें करना शुरु किया। शुकीने कहा हे प्यारे! इस राजकुमार को दो बीजोरे के फल देकर अतिथि-सत्कार करके हमें अपना जीवन सफल बनाना चाहिये। बड़े फल के खाने से राज्य प्राप्ति और छोटे के खाने से मंत्रीपद की प्राप्ति होती है। ऐसा कह उस शुक युगल ने उड़कर कहीं से दो बीजोरे के फल वहां लाकर कुमार के सामने रख दिये और उड़कर कहीं अन्यत्र चला गया। गुणचन्द्र ने उठाकर उन फलों को अपने पास रखलिया।

राजकुमार के जगने पर मतिमान् गुणचन्द्र ने उन दोनों फलों को उसके सामने रखकर बड़ी प्रसन्नता से शुकयुगल का वृत्तान्त कह सुनाया। कुमार ने कुशल मनाते हुए उन फलों को सुरक्षित रखने को कह सारथी से रथ जुड़वा कर मुसाफरी शुरु की। चलते-चलते वे एक बड़े तालाब के किनारे पहुंचे। प्रातःकाल हो गया था। सबने वहां रुक कर प्रातःकालीन कृत्य किये। यहीं पर मित्र द्वारा दिये राजयोग कारक पहले बीजोरा फल को कुमार ने खाया। मंत्री पद कारक दूसरे बीजोरा फल को गुणचन्द्र और सारथी–दोनों मित्रों में बांट दिया।

भोजन कार्य से निपट कर कुमार मित्र के साथ उस सुन्दर वन को देखने के लिये इधर उधर घूमते-घूमते वहां शान्त स्वरूप दयालु जितेन्द्रिय और संयम साधना में रमण करनेवाले श्रीसुव्रत नाम के एक मुनीश्वर को देखा।

साधुओं का दर्शन पुण्यकारी होता है। साधु जंगम चलते फिरते तीर्थ रूप होते हैं। दूसरे तीर्थ तो समय पर फल देते हैं। पर साधुओं का सत्संग तत्कल फल देने वाला होता है। इसीलिये कहा है—

साधूनां दर्शनं पुण्यं—तीर्थ—भूता हि साधवः।
तीर्थं फलति कालेन—सद्यः साधु—समागमः।।

कुमार साधु दर्शन से आत्मा को कृतार्थ मानता हुआ बड़े विनय से उस साधु महाराज को नमस्कार करके अपने उचित स्थान पर बैठ गया। उन मुनिराज ने भी धर्म लाभ रूप आशीर्वाद देकर उन्हें अधिकार समझ समयोचित धर्मोपदेश दिया।

अय भव्यात्माओं। मानव जीवन बड़ी कठिनता से प्राप्त होता है। उसमें भी आर्यदेश और श्रावककुल में जन्म पाना और भी कठिन होता है। उसके पा लेने पर भी आरोग्यमय दीर्घ-आयुष्य, सद्गुरु का समागम, शास्त्र-श्रवण, तात्त्विक बातों की श्रद्धा और सदाचार में शक्ति को लगाना किसी भाग्यशाली को ही प्राप्त होता है।

अय महानुभावों! अप्राप्य सामग्री को पाकर के भी प्रमादी मानव धर्माचरण से वंचित रह जाता है। इसलिये प्रमाद को छोड़कर दान, शील, तप और भाव रूप धर्म में पुरुषार्थ को लगाना चाहिये। धर्माराधन से ही प्राणी अनन्त संसार सागर को पार कर जाता है। अनादिकाल से आत्मा मोह से बेहोश रहता आया है। उसे होश में लाकर व्रत साधना से जीवन को ऊंचा उठाना चाहिये।

सर्वथा हिंसा-झूठ-चोरी-विषयसंग और मूर्च्छा के त्याग से पंच महाव्रतों को धारण करने चाहिये।

हे कुमार! तुम्हारे शरीर में छत्राकार तीन रेखायें हैं। इससे पता चलता है कि तुम छत्रधारी पिता के पुत्र और छत्रधारी नाना के दोहिते कोई छत्रधारी राजा होने योग्य लक्षणों वाले दीखते हो। इस हालत में अगर अधिक साधना तुमसे न हो सके तो भी समय पर सामायिक व्रत की साधना

और अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु रूप पंच परमेष्ठी नमस्कार मन्त्र का नित्य स्मरण तुम्हें अवश्य करना चाहिये।

जो भव्यात्मा दो घड़ी अडतालीस मिनट तक समभाव से सामायिक करता है वह कर्मों की निर्जरा करता हुआ कम से कम वैमानिक देवता के आयुष्य का अधिकारी होता है। ।।१।। जो त्रस और स्थावर जीवों के प्रति शत्रु मित्र भाव की विषमता न रखता हुआ समभाव रखता है वहीं व्यक्ति सामायिक करने का अधिकारी होता है। ।।२।। एक आदमी हमेशा एक लाख खांडी (सोलह मण की एक खांडी) सोना दान करता है और दूसरा केवल सामायिक करता है। वह सोना देने वाला सामायिक करने वाले की बराबरी नहीं कर सकता।।३।।

सांप डसे आदमियों के विष को जैसे गारुड़ि मंत्र नष्ट कर देता है उसी प्रकार नवकार मंत्र मनुष्यों के पाप रूपी विष को मिटा देता है। ।।१।। नवकार मंत्र के जाप करने वाले का डाकिनी, वेताल, राक्षस और महामारी कुछ नहीं बिगाड सकते और सारे पाप अपने आप नष्ट हो जाते हैं ।।२।। पंच परमेष्ठि नमस्कार मंत्र के चिंतन मात्र से जल-आग-दुश्मन-प्लेग-और-राजा आदि के किये घोर उपसर्ग मिट जाते हैं।।३।। जो कोई भव्यात्मा कर्म मल मुक्त हो मोक्ष में गये हैं जाते हैं–और जायेंगे वे सभी नवकार मंत्र के प्रभाव से ही जाते हैं।

अतः हे महानुभाव कुमार ! नवकार मंत्र का स्मरण सदा करते रहना चाहिये जिससे जीवन मंगलमय वन जाता है।

इस प्रकार गुरुमहाराज के उपदेश को सुनकर प्रतिबोध पाये हुए उन श्री चन्द्रकुमार ने, गुणचन्द्र ने और सारथी ने गुरुदेव से आत्म दर्शन रूप सम्यक्त्व स्वीकार किया, और श्रावक धर्म के अधिकारी हो गये। अमृत-रसास्वादन से भी अधिक आनन्दित हुए कुमार ने हाथ जोड़कर कहना शुरू किया–गुरुदेव! आप जंगम तीर्थ रूप हैं। आपके दर्शन पाकर आज मैं कृतार्थ हो गया हूँ। गुरु की दया के बिना बुद्धिमान पुरुष भी धर्म तत्व को जानने में समर्थ नहीं हुआ करता है। इस तरह सिद्धि–कलायें–सब प्रकार की विद्यायें और आत्म हितकारी धर्मतत्व ये सब गुरु कृपा से ही प्राप्त होते हैं। संसार के सुख और संबंधी तो मिला ही करते हैं पर तारणहार तीर्थरूप

सद् गुरु का समागम भारी भाग्य से ही मिलता है। मैं आज धन्यों से भी धन्य जीवनवाला आप के श्री चरणों के दर्शन से हो गया हूँ।

हे भगवन् आप के प्रवचन ने मुझे नवजीवन प्रदान किया है। हृदय की आंखें आज मेरी खुल गई हैं। मैं आज पंच परमेष्ठी महामंत्र का जाप करने की प्रतिज्ञा करता हूँ। इस प्रकार श्री गुरु महाराज की स्तुति और वंदना करके कुमार ने वहां से आगे के लिये प्रस्थान किया।

भुवन भास्कर दिन मणि सूर्य प्राणि मात्र को अपनी प्रखर किरणों से संतप्त कर रहा था। आकाश से आग बरस रही थी। गरम हवा के झौंके शरीर पर जलते अंगारों के समान लगते थे। सभी पेड़ पौधे झुलस गये थे। गर्मी के मारे पृथ्वी तवे के समान तप रही थी। ऐसे समय में श्रीचन्द्र कुमार अपने मित्र के साथ सुवेग रथ में बैठ नदी, नालों, वनों, उपवनों को पार करता हुआ एक गहन जंगल में जा पहुँचा था।

गर्मी की अधिकता ने कुमार को भी आघेरा था। उस का मुख मुरझा गया था, और प्यास के मारे उसके कण्ठ सूखने लगा था। पानी का कहीं पता नहीं लगता था। मित्र बहुत दुःखी थे। वे आपस में कहने लगे, न मालूम आगे क्या होने वाला है? कुमार सूखे पत्ते की तरह कुम्हला गया है। केवल एक यही उपाय शेष रह गया है कि इस ऊंचे पेड़ पर चढ़ कर जल की तलाश की जाय।

सारथी झपट कर पेड़ पर चढ़ गया। उसने इधर उधर चारों ओर नजर दौड़ानी शुरु की। थोड़ी ही देर में दक्षिण की ओर उसे एक सरोवर दिखाइ पड़ा। वह बड़ी प्रसन्नता से नीचे उतरा और गुणचन्द्र से बोला मित्र यहां से दक्षिण की ओर बगुले और चकवे उड़ते नजर आते हैं। अतः अवश्य ही उधर कोई तालाब है। सारथि रथ पर बैठ गया और बात की बात में वे तीनों वहां पहुंच गये। सरोवर के किनारे पर आमों का एक सुन्दर वन था। वहीं पर एक सघन आम के पेड़ के नीचे रथ ठहराया गया। दोनों मित्र दौड़कर स्वादिष्ट और शीतल जल ले आये। कुमार ने खूब धाप कर पानी पिया। कुछ स्वस्थ होने पर सरोवर की पाल पर आया, और वहां बैठ कर तालाब की शोभा निहारने लगा। कला पूर्ण पत्थरों की सुन्दर बांधनी को देख कर वह अचरज में डूब गया।

थोड़ी देर बाद मित्रों के साथ तालाब के किनारे-किनारे कुमार घूमने लगा। एक जगह उसने देखा कि कोई धोबी सुन्दर और बहुमूल्य वस्त्रों को धो-धो कर धूप में सुखा रहा है। कुमार की दृष्टि धूप में सूखती एक बहुमूल्य और बारीक साड़ी पर पड़ी। उसे देख उससे न रहा गया, और उसने अपने मित्र गुणचन्द्र से कहा–मित्र! इस साड़ी की ओर देखो। गंध के वशीभूत हुए भौंरे इस पर मंड़रा रहे हैं। इससे यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि यह किसी पद्मिनी स्त्री की साड़ी है। इसके पसीने की पद्म गंध से प्रेरित ये भौरें इस पर मंडरा रहे हैं। कहा भी है—

पद्मिनी स्त्री के शरीर में कमल के समान सुंगध होती है। हस्तिनी स्त्री के शरीर में हाथी के मद के जैसी गंध होती है। चित्रिणी के शरीर में तरह-तरह की गंध निकलती है, और शंखिनी स्त्री के शरीर में मछली की सी गंध होती है।

क्रमशः

तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर कलकत्ता में आयोजित विभिन्न कार्यक्रम

श्री जैन संघ – भगवान महावीर के जन्म कल्याणक के अवसर पर कलामंदिर में दिनांक १३ अप्रैल प्रातः १० बजे से भगवान महावीर के जीवन पर नृत्य नाटिका एवं भक्ति संगीत के कार्यक्रम आयोजित किये गये। सांस्कृतिक कार्यक्रम श्रीमती कल्पना जैन द्वारा प्रस्तुत किया गया।

श्री जैन श्वेताम्बर पंचायती मंदिर में दिनांक १५ अप्रैल २००३ को भगवान महावीर के जन्म कल्याणक दिवस पर संध्या सांय ७ बजे से भक्ति संगीत का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

श्री श्वेताम्बर स्थानक वासी जैन सभा द्वारा १५ अप्रैल प्रातः ९ बजे से श्री जतनलाल जी रामपुरिया की अध्यक्षता में एक समारोह आयोजित किया गया।

मुर्शिदाबाद संघ द्वारा भगवान् महावीर जन्म कल्याणक पर १५ अप्रैल को सांय ५.३० बजे कलामंदिर में आयोजित कार्यक्रम में चण्डकौशिक नृत्य नाटिका की प्रस्तुति की गयी। मुख्य अतिथि श्रीमती मीना पुरोहित (उपमेयर कोलकाता पौर संघ) थी। प्रमुख वक्ता थे प्रो. सत्यरंजन बनर्जी, डा. वसुमति डागा एवं डा. इन्दू जोशी।

भव्य अंजन श्लाका-प्रतिष्ठा महोत्सव– महाराजा भोजकी धारा नगरी में श्री भक्तामर महातीर्थ-अयुदय धाम, धार (म. प्र.) दिनांक १४ मई २००३ को भगवान् आदिनाथ प्रभु के जिनबिंब की अंजनश्लाका प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न हुआ।

जैन गौरव अलंकरण से सम्मानित– मुम्बई में २३ मार्च को अहिंसा क्रास मैदान चर्च गेट में प्रातः ९.३० बजे चेतन्य काश्यप फाउण्डेशन द्वारा संस्थापित समग्र जैन समाज का सर्वोच्च अलंकरण **जैन गौरव** मुम्बई में एक समारोह में अहिंसा यात्रा प्रणेता, युग प्रधान आचार्य श्री महाप्रज्ञजी की पावन निश्रा

में विशिष्ट मेहमान श्री के. सी. सुदर्शन (सर संघचालक, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ) की उपस्थिति में डॉ. कुमारपाल भाई देसाई (डायरेक्टर, स्कूल ऑफ लैंग्वेज, गुजरात यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद) को प्रदान किया गया।

भारत जैन महामंडल के तत्वावधान तथा आचार्य महाप्रज्ञ व्यवस्था समिति मुम्बई के सौजन्य से आयोजित समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. सत्यनारायण जटिया (केन्द्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री) व विशेष अतिथि श्री धीरूभाई शाह (पूर्व अध्यक्ष, गुजरात विधानसभा)। समारोह संयोजक श्री शांतिलाल कवाड़ के अनुसार फाउण्डेशन के सौजन्य से संस्थापित **'जैन गौरव अलंकरण'** में मान पत्र, सवालाख रुपये की राशि प्रदान की गई है।

साभार— श्वेताम्बर जैन

भगवान् महावीर जयंती की पूर्व संध्या पर उपराष्ट्रपति भवन में सर्वधर्म समभाव—जैनों की प्रतिनिधि संस्था जैन महासभा-दिल्ली के तत्वाधान में भगवान महावीर जयंती के उपलक्ष्य में उपराष्ट्रपति निवास पर एक सर्वधर्म समभाव सभा का आयोजन किया गया। भगवान महावीर के चित्र के समक्ष दीप प्रज्जवलित कर महामहिम उप राष्ट्रपति श्री भैरोंसिंह शेखावत ने आज के युग में धार्मिक सहिष्णुता पर जोर डालते हुए भगवान महावीर के सिद्धांतों को मानवीय कल्याण के लिए अति आवश्यक बताया।

साभार— श्वेताम्बर जैन

जैन एकता विश्व शान्ति का भव्य आयोजन— श्री महावीर भगवान् का २६०२वां जन्म कल्याण महोत्सव के उपलक्ष में केशरियाजी में चैत्र शुक्ला त्रयोदशी गुरुवार दिनांक १५ अप्रैल, २००३ प्रातः ९.०० वजे से जैन एकता विश्व शान्ति महावीर विधान के भव्य आयोजन के अन्तर्गत वीर भूमि हल्दीघाटी से १००८ जोड़े दिनांक १० अप्रैल, २००३ प्रातः ६.०० बजे से पैदल प्रस्थान कर प्रथम वन्दना १५ अप्रैल की प्रातः ७.०० बजे ऋषभदेव मंदिर में वन्दना कर भव्य आयोजन में सम्मिलित हुए।

साभार— जैन एकता संकल्प

महावीर जयन्ती पर विशेष आवरण—बिहार डाक परिमंडल (भारतीय डाक, विभाग) ने भगवान महावीर जयंती के शुभ दिन विशेष आवरण एवं विरूपण जारी किया है। यह विशेष आवरण भगवान महावीर के दिव्य संदेश **जीओ और जीने दो** पर आधारित है। यह विशेष आवरण मात्र रु. १५/- + डाक खर्च अतिरिक्त रु. १०/- में प्राप्त किया जा सकता है, द्वारा--प्रदीप जैन, पोस्ट बॉक्स १२८, मीठापुर पटना-८०० ००१, Email : philapradip@hotmail.com

साभार— गणधर

मरुधर ज्योति श्री मणिप्रभाश्रीजी का १५ जून को कोलकाता में चातुर्मासिक प्रवेश— मधुबन : ६ अप्रैल। मंगल प्रवेश के पश्चात आयोजित धर्मसभा में पूज्य गुरुवर्या श्री मणिप्रभाश्रीजी ने आगामी चातुर्मास कोलकाता करने की घोषणा की। कोलकाता में उनका चातुर्मासिक प्रवेश १५ जून को होगा।

प्रवेश के अवसर पर जैन श्वेताम्बर सोसायटी के अध्यक्ष श्री कमल सिंह रामपुरिया, श्री आलोकचंदजी दूगड़, सुयशकुमार सिंहजी, श्री ज्ञानचंदजी लुणावत, श्री आनन्द चन्दजी ओस्तवाल, श्री धर्मचंदजी कास्टिया, श्री कान्तिलालजी श्रीमाल, श्री भीकमचंद डागा, कंवरलालजी कोचर, श्री टीकम चंदजी डागा आदि की उपस्थिति विशेष उल्लेखनीय थी।

संकलन—

कितना प्रदूषण है आपके घर में

कर्मवीर अनुरागी

प्रदूषण आज संसार की सबसे प्रमुख समस्या है जिससे पर्यावरण शास्त्री, वैज्ञानिक व बुद्धिजीवी सभी चिंतित हैं लेकिन हम उस प्रदूषण के प्रति चिंतित नहीं हैं जो हमारे घर के आसपास का है, घर के अंदर का है, रसोई घर का है। कारखाने, पैट्रोल चालित वाहन नदियों का प्रदूषित जल आदि पर तो सबका ध्यान जाता है लेकिन हमारे घर में व घर के आसपास के प्रदूषण के प्रति हम उदासीन हैं। आइये, हम अपने घर के अंदर होने वाले प्रदूषण के बारे में जाने और उससे बचने का प्रयास करें। हमारे दैनिक इस्तेमाल में कई ऐसी चीजें आती है जिन्हें हम आधुनिक जीवन का अनिवार्य अंग मानते हैं लेकिन उनके प्रभाव भयानक रूप से हानिकारक होते जा रहे हैं। नये शोधों से यह पता चला है कि कई प्रकार की धातुएं, प्लास्टिक रसायन व गैस जो हम नित्य काम में लाते हैं उनसे स्वास्थ्य की बड़ी क्षति हो रही है। प्रारंभ हम रसोईघर से करते हैं। नल जिससे रसोई घर में पानी आता है, उसके जोड़ों में यदि रांगा है तो वह पानी को विषैला करता रहता हैं, पीतल की टंकियां पीतल का विष घोलती हैं। जिन बर्तनों पर हम कलई करवाते हैं, उसमें रांगा मिला होता है जो अक्सर कलई के महंगे होने के कारण मिला दिया जाता है। हम पानी को साफ करने के लिए फिल्टर लगाते हैं, उनमें लगी बत्तियों या चलनियों को समय-समय पर बदलते रहना चाहिए अन्यथा इन फिल्टरों में ही कीटाणु पनपते रहते हैं और पानी पीने योग्य नहीं रहता। धातु के बाद हम प्लास्टिक का उपयोग भी खूब करते हैं। प्लास्टिक में भी कई प्रकार के हानिकारक तत्व उत्पन्न होते हैं। फ्रिज के अन्दर पानी को ठंडा रखने के लिए प्लास्टिक की बोतलों का इस्तेमाल होता है उनसे खतरा भी उत्पन्न हो सकता है। यदि पुराने प्लास्टिक को गलाकर तेज रंग मिलाए तो उनके बने खिलौने बच्चों के लिए हानिकारक हो सकते हैं।

रसोई में ईधन के रूप में गैस का प्रयोग आम हो गया है। गैस जलने में बहुत कम मात्रा में नाइट्रोजन आक्साइड भी देती है। जिन चूल्हों में गैस पूरी तरह चलती हो, उनमें कार्बन मोनोआक्साइड गैस निकलती है। नाइट्रोजन आक्साइड से गले व फेफड़ों में जलन होती है। तथा दमा रोग पनपता है। कार्बन मोनोआक्साइड तो घातक जहर है ही इसलिए रसोईघर का कमरा हवादार होना आवश्यक है, साथ ही गैस के चूल्हे की सफाई व रख रखाव भी ठीक होना चाहिए। उन्नत देशों में तो सुरक्षित डिटर्जेंट मिलने लगे हैं, लेकिन विकासशील देशों में इस बात की ओर ध्यान नहीं दिया जाता। यदि डिटर्जेंट पाउडर कपड़ों से पूरी तरह नहीं निकाला गया तो शरीर के साथ लगे कपड़ों से चर्म रोग भी फैल सकता है। घरों में मच्छर, खटमल व मक्खी मारने के लिए जो कीटनाशक उपयोग में लाए जाते हैं उनकों सूंघने से कई प्रकार के श्वास रोग हो सकते हैं। हमारे घरों में लगे बिजली के बल्ब की रोशनी से जो पीला प्रकाश निकलता है वह प्राकृतिक प्रकाश के सात रंगों में से लाल को अधिक निकालता है। यदि ट्यूबलाइट है तो वह पीले हरे रंग को ज्यादा निकालती है। इन दोनों से आंखों पर बुरा असर पड़ता है। पश्चिमी देशों में ऐसे बल्ब मिलने लगे हैं जिनसे दिन जैसा प्रकाश निकलता है। इससे कम हानि होती है।

साभार— रूपरेखा अप्रैल, २००३

भगवान महावीर जयंती पर पशुवध, मांस और शराब की बिक्री पर पाबंदी लगवाएँ—जैनों की प्रतिनिधि संस्था जैन महासभा-दिल्ली ने पूरे देश में अभियान शुरू किया है कि तीर्थंकर पशु महावीर की जन्म-जयन्ती पर पूरे देश में पशु-पक्षी वध, मांस एवं शराब की बिक्री पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया जाय। इस संदर्भ में महासभा ने केन्द्रीय गृहमंत्री श्री लालकृष्ण आडवानी को प्रतिवेदन भी भेजा है।

बूचड़खाने मूलतः प्रदेशों की सरकारों के कार्यक्षेत्र में आते हैं। इसलिये महासभा ने सभी प्रदेशों के मुख्य मंत्रियों को पत्र भेजकर इस संदर्भ में कार्यवाही करने की मांग की है। सभी जैन सांसदों, जैन समाज से जुड़े अन्य सांसदों, विभिन्न प्रदेशों की सरकारों में जैन मंत्रियों और जैन विधायकों

को तथा देश के प्रमुख जैन नेताओं को पत्र भेजकर मांग की गई है कि वे इस संदर्भ में अपनी सक्रिय भूमिका निभाएँ तथा यह सुनिश्चित करवाएँ कि इस परम पावन दिवस को **मांस एवं शराब रहित दिवस** के रूप में मनाया जाए। जैन महासभा दिल्ली ने मूर्धन्य जैनाचार्यों से प्रार्थना की है कि इस संदर्भ में अपने प्रभाव का प्रयोग कर नेताओं को प्रेरित करें कि भगवान महावीर की जन्म-जयन्ती को **अहिंसा दिवस** के रूप में ही मनाया जाए।

देश के सभी जैन नेताओं और संगठनों से निवेदन है कि वे अपने-अपने क्षेत्रों और प्रदेशों में इस मांग को मुखर करें तथा अपने सम्पर्क में आने वाले तथा अपने क्षेत्र के सांसद और विधायक से व्यक्तिगत एवं प्रतिनिधि मंडल के रूप में मिलकर ज्ञापन दें और उन्हें इस अहिंसक अभियान को अपना समर्थन देने के लिए प्रेरित करें।

प्राप्त जानकारी के अनुसार मध्यप्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़ और गुजरात प्रदेश की सरकारों ने महावीर जयन्ती के पावन प्रसंग पर बूचड़खाने बंद रखने तथा पशु-पक्षी हत्या पर पाबंदी लगाने की घोषणा कर दी हैं। इन प्रदेशों के जैन नेता और जैन संगठन यह सुनिश्चित करें कि इन घोषणाओं की व्यवहार में पालना की जाए।

—प्रो. रतन जैन

नील् गायों की हत्या रोकी जाये— जिस धरती पर दया, करुणा, प्रेम, अहिंसा का दरिया बहना चाहिए वहाँ सरकार ही खून की होली खेल रही है। राजस्थान में वन, राजस्व व पुलिस महकमे के के अफसरों को नील गायों की हत्या करने की अनुमति देने का कानूनी अधिकार है। जब धरती पर लहू बह रहा है, वहाँ अकाल व सूखे की स्थिति दूर होना कैसे संभव होगा? पता नहीं गांधीवादी सरकार को यह कब समझ आएगी कि हिन्दुस्तान की संस्कृति में हत्या करना किसी समस्या का कभी समाधान नहीं हो सकता। नील गायों की समस्या से यदि कुछ लोग परेशान हैं तो उनके लिए कोई भी अहिंसक तरीका अपनाया जाए, परन्तु हत्या की अनुमति का कानून महावीर, बुद्ध, राम, कृष्ण, गुरुनानक, गांधी की दया, अहिंसा, करुणा के साथ पष्टता खिलवाड़ है।

आप भी मुख्यमंत्री से यह अनुरोध करें कि कृपया नील गायों को भी जीवन दान दें। उनकी हत्या का फरमान तुरन्त रद्द करें। नील गाय भी पूर्णतया वन्य प्राणी है और उसे भी शेर, बाघ, चीतल, मृग, हिरण, भालू, मोर, सांभर आदि वन्य जीवों की तरह जीने का संबैधानिक रूप से भी अधिकार प्राप्त है। जब सारे संसार में वन्य प्राणियों के जीवन के प्रति मानवाधिकारों की बात उठ रही है, फिर नील गायों को भी जीवन दान मिलना चाहिए। यदि दया, अहिंसा की भावना को अपनाकर मुख्यमंत्री जी ने आपकी पहल पर नील गायों की मार्मिक पुकार सुन ली तब यह बहुत बड़ा पुण्य सिद्ध होगा।

–कमलकिशोर गहलोत, पालासनी, जोधपुर

अन्तस यात्रा— मनुष्य ने जो कर्म-बंधन जन्मों-जन्मों के योग में बाँधे हैं उन्हें ध्यान के निर्मल क्षण काटते हैं। जब-जब हम साधना और ध्यान की गहराई में उतरते हैं, हमारे बंधन खुद-ब-खुद टूटते चले जाते हैं। ध्यान की दिव्यता से इन कर्मों को हटाना ऐसे ही है जैसे दर्पण से धूल हटाना। एक दर्पण जिस पर वर्षों से धूल जमी हो, लेकिन कपड़ा फेरते ही वह पुनः चमकने लगता है। ठीक उसी तरह ध्यान का कपड़ा चेतना पर जमी विकारों की धूल को साफ कर देता है। हमारी मुश्किल यह है कि हम भीतर के दर्पण को पहचान नहीं पाते और बाहर के दर्पणों की सफाई में ही उलझकर रह जाते हैं। राग और संसार से आसक्ति हमारे भीतर के दर्पण की धूल को हटने नहीं देती। मैं और मेरे मन का भाव इस संबंध को मजबूत करते रहता है। जहाँ आसक्ति और ममत्व बुद्धि के तार जुड़ते है, वहाँ मानव मन प्रतिबिम्बित होने लगता है। उसके विचार और कर्म उसी ओर गति करते हैं, जहां ममत्व भाव रहता है। एक व्यक्ति जो ध्यान की गहराई में प्रवेश करना चाहता है, उसकी गहराई के द्वार पर भी ममत्व का पहरा रहता है और यह पहरी उसे बार-बार संसार में खींच लेता है। कभी-कभी तो ऐसा भी होता है, लेकिन असक्ति का छिलका उसके पाँव तले आ जाता है और वह फिसलकर शिखर से नीचे की सीढ़ी पर आ गिरता है। वर्षों की साधना आर्सक्ति के कारण विफल हो जाती है। ये आसक्तियाँ किसी भी तरह की हो

सकती है - कषाय, राग - द्वेष, ममत्व, क्रोध, मद, मान, माया, लोभ आदि हो सकते हैं। शिखर पर पहुँचकर भी ये शूल हमें शिखर का स्वामी नहीं बनने देते हैं।

आवश्यकता है जिंदगी में ध्यान को जगाने की। हम फिल्म भी कितने ध्यान से देखते हैं कोई थोड़ा-सा शोरगुल मचा दे, तो बेचैन होने लगने हैं। यह ध्यान, यह सजगता बर्हिमुखी है। इसे अपने अंदर की ओर ले जाना है। हमें अपनी अन्तस् शक्ति, अपनी भीतर की उर्जा को जांग्रत करना है। ध्यान के द्वारा यह सब पाया जा सकता है। ध्यान के द्वारा हम परमात्मा बन सकते हैं। आवश्यकता है खोजने की अपने भीतर ही। भगवान बुद्ध के पास एक युवक पहुँचा। पूछने लगा भगवन्! समाधि में प्रवेश करने से, सिद्धि को पा लेने से आपको क्या मिला। भगवान मुस्कराए और कहने लगे वत्स, कुछ भी नहीं मिला, सिर्फ खोया ही खोया है। युवक चकित रह गया कि ऐसा कैसे हो सकता है भगवन्! बुद्ध ने समाधान किया, जिसे मैं ख़ोज रहा था, उसे पाने की जरूरत नहीं थी–वह तो सदा से मेरे भीतर ही विद्यमान था। और जो खोया है वह है मेरी वृत्तियाँ, कषाय, भाव, मन और मन की तरंगें, विचारों की उथल-पुथल ये सब मैंने खोये हैं।

अतः साधना और समाधि पाने की नहीं खोने की यात्रा है। जब सब कुछ छूट जायगा तो वो प्राप्त हो जायेगा जो सदा से भी भीतर विद्यमान है। हम घर से खड़े-खड़े चाहे जितना सोचे कि घर मुझसे पीछे छूट जाए, घर छूटने वाला नहीं। हमने अपना कदम आगे बढ़ाया कि घर छूट गया। ध्यान भी दो कदम आगे बढ़ने की प्रक्रिया है। मेरे और तेरेपन के भाव को तिरोहित कर सम्पूर्ण अस्तित्व में स्वयं का विस्तार करने की साधना है तभी पावन दशा उपलब्ध होगी और दिव्यता की किरणें सभी को आलोकित करेंगी।

साभार– बिंदिया जैन, तारणबन्धु मासिक

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2220-8105/2139,(Resi) 2329-0629/0319

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Kolkata - 700 020
Ph: (O) 2247-6874, (Resi) 2246-7707

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 2282-5234/0329

ARIHANT JEWELLERS
Shri Mahendra Singh Nahata
M/s BB Enterprises
8A, Metro Palaza, 8th Floor 1,Ho Chi Minh Sarani,
Kolkata - 700 071
Ph: 2288 1565 / 1603

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box:16127,
Kolkata -700 017
Ph: (033) 2240-3758/1690/3450/0514
Fax: (033) 2240-0098, 2247 1833

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
93/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2220 8967, (Resi) 2247 1750

MAHASINGH RAI MEGH RAJ BAHADUR
Goalpara, Assam

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 2455-3586

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 2226-2418, (Resi) 2475-2730, 2476-8730

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Kolkata - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Ph: (O) 2235 0623, (Resi) 2239-6823

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road,
Kolkata - 700 007
Ph: 2238-8677/1647, 2239-6097

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2348-8576/0669/1242
(Resi) 2225-5514, 2237-8208, 2229-1783

APRAJITA
Air Conditioned Market
Kolkata - 700 071
Ph: (O) 2282-4649, (Resi) 2247-2670

ASHOK KUMAR RAIDANI
6, Temple Street, Kolkata - 700 072
Ph: 2237-4132, 2236-2072

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata, Ph: 2464-1186,

SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor,
24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071
Ph: 2247-7450/5264

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments &Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 2238-4755, (Resi) 2238-0817

APARAJITA BOYED
Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106
Ph: 2665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in
sona@cal3.vsnl.net.in

B.W.M.INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178, 25779, 25778
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151-202256 (Bikaner)

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani
Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 2233-1766, 2238-8846
Mobile: 9831028566
Resi : 2355-9641/7196

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 2220-2074/8958 (D) 2220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2220 9755
Resi: 2464-3235/1541, Fax: (033) 2464 0547

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: 2282-8181

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
C/o Shri P.K. Doogar,
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007,
Ph: 2239-1408

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203 /1 M. G. Road, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 2238-9356/0950 (Fact). 2557-1697/7059

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 2229-5047/9110

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 2248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment
15/1 Chakrabaria Lane,
Kolkata - 700 026, Phone : 2476-1533

MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East
Kolkata - 700 069

ABL INTERNATIONAL LTD.
1, Shakespeare Sarani, Kolkata - 700 071.
Ph: 2282-7615/7617/2726, Gram : Sudera

SHIV KUMAR JAIN
"Mineral House"
27A, Camac Street, Kolkata - 700 016
Phone : (Off) 2247-7880, 2247-8663
(Res) 2247-8128, 2247-9546

PRADIP KUMAR LUNAWAT
P-44 Dr. Sundari Mohan Avenue
Kolkata - 700 014, Phone : 2249-0103

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Kolkata - 700 001 Ph: 2235-2076, 2235-5701

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2229 6256/8730/1029
Resi: 2247 6526/6638/22405126
Telex: 2021 2333, ARBI IN, Fax : 2226 0174

DR. NARENDRA L. PARSON & RITA PARSON
18531 Valley Drive
Villa Park, California 92667 U.S.A.
Phone : 714-998-1447714998-2726,
Fax : 7147717607

SPACE & WINGS
Travel Agents
Domestic & International Airlines
Phone : 2242-7806/8835/5852
10, Dr. Rajendra Prasad Sarani (Clive Row)
1st Floor, Kolkata - 700 001 Fax : 2242 8831
P.S.A. Biman Bangladesh Airlines

RAJIB DOOGAR
305, East Tomaras Avenue
Savoy, IL 61874-9495
USA
Phone : 001-217-355-0174/0187
e-mail : doogar@uiuc.edu

SUBHASH & SUVRA KHERA
6116, Prairie Circle
Mississauga LS N5Y2
Canada
Phone : 905-785-1243

M/S. SARAT CHATTERJEE& CO. (VSP) PVT. LTD.
Regd Office 2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)
2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001
Ph: 2220-7162, 2261-0540, Fax : (91)(33)2220 6400
e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H. M. T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Kolkata - 700 007 (Phone : 2239-7607)

अ angan
Rajasthan Village Theme Resturant at Swabhumi
89/c, Narkeldanga Main Road, Kolkata - 700 054
Phone : 2359 2031, e-mail : www.jiggis.com

PRITAM ELECTRIC & ELECTRONIC PVT. LTD.
Shop No. G- 136, 22, Rabindra Sarani,
Kolkata - 700 073, Phone : 2236-2210

MAHENDRA TATER
147, M. G. Road
Kolkata - 700 007, Phone : 2227-1857

RABINDRA SINGH NAHAR
40/4A, Chakraberia South, Kolkata - 700 020
Phone : (O) 2244-1309, (R) 2475-7458

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

VEEKEY ELECTRONICS
Madhur Electronics, 29/1B, Chandani Chowk
3rd floor, Kolkata - 700 013
Ph: 2352-8940/334-4140
(Resi) 2352-8387/9885

MAUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrellas
45, Armenian Street, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 2242-4483/9181, (O) 2238-1396/1871
Fax : 2231-2151, 2666-6013

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
D. C. Group Pvt. Ltd, Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Kolkata - 700 007
Phone : 2220-5229/5121

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Kolkata - 700 007, Phone : (033)2230-1329, 2232-1033
Fax : 91-33-2302413

ELECTO PLASTIC PRODUCTS PVT. LTD.
22 Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 2236-3028, 2237-4039

KRISHNA JUTE COMPANY
Jute Broker & Dealer
9, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-0874/9372, 2221-0246

LILY SUKHANI
7, Bright Appartment, 7 Bright Street
Flat No. 7 C., Kolkata - 700 019
Phone : 2287-0448

M/S. SETHIA OIL INDUSTRIES LTD.
Manufactureres of De oiled cakes & Refined oil.
Lucknow Road, PO. Sitapur - 261001 (U.P.)
Phone: 05862/42017/42073

M/S. SHREE SILK STORE
House of :
.Banarasi Sarees & Velvet Articles etc.
P-25, Kalakar Street, Jain Katra
Kolkata - 700 007
Phone: 2268 2671, 666 4422

SAROJ DUGAR
Fancy saree, bed covers
34/1J. Ballygunge Circular Road
Kolkata - 700 019, Phone: 2475 1458

M/S. POLY UDYOG
Unipack Industries
Manufacturers & Printers of HM; HDPE,
LD, LLDPE, BOPP PRINTED BAGS.
31-B, Jhowtalla Road
Kolkata - 700 017, Phone: 2247 9277, 2240 2825
Tele Fax: 22402825

M/S. B.C. JAIN JEWELLER'S (PVT.) LTD.
Govt. approved valuer for Jewellery.
Director: Bimal Chand Jain/Vikash Jain/Vivek Jain
39, Burtolla Street, Kolkata - 700 007

DHANDHIA BROS
6/1 Hara Prasad Dey lane, Kolkata - 700 007
Phone: (R) 2239-6241/2950 (O) 2239-0581

M/s. MUKUND JEWELLERS
manufactures of American Diamand
Jewellery, Gold & Silver Goods &
Dealers in imitation Jewellery
P-37A, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone: 2232 3876

SHRI MANILAL RAJENDRA KUMAR JAIN (DUSAJ)
Dealers : Diamond, Precious Stones, Semi Stones &
Readymade Ornaments,
Phone: 2237 5869/6476
(Mobile): 98301017091, 9830142191

DEEPAK KUMAR SANDEEP KUMAR NAHATA
Dealers in Diamond
Manufactures of Precious & Semi Precious Ornaments
Burtala, Kolkata - 700 007,
Phone: (G) 2238-0900 (M) 9830094325

BADALIA GEMS PVT. LTD.
BADALIA HOUSE
66/3, Beadon Street, Kolkata - 700 006
Phone: (O) 2554-8999/8997 (R) 2533-9985,
Fax : 033 5548999, e-mail : shashibadalia@usa.net

M/S. BEEKAY VANIJYA PVT. LTD.
City Centre
19, Synagogue Street
5th Floor, Room No. 5342535
Kolkata - 700 001
Phone: 2210-3239, 2232-0144, 2238-7281
Fax: 033-2210-3253 (M) 9831001739
e-mail : bktarfab@satyam.net.in

WHILE PURCHASING HEASIAN, SACKING, YARN AND DECORATIVE FURNISHING FABRICS & OTHER JUTE PRODUCTS, PLEASE INSIST ON QUALITY PRODUCTION.

We are, always ready to meet the Exact type of your requirement.

AUCKLAND INTERNATIONAL LTD.

(UNIT : AUCKLAND JUTE MILLS)

"KANKARIA ESTATE"

6, Little Russel Street,
Kolkata - 700 071

A RECOGNISED EXPORT HOUSE

Cable : SWANAUCK, KOLKATA
Telex : 212396 AUCK IN
Codes : BENTLEY'S SECOND
Phone: 22479921/9720,22402683

Registered Office &
'JUTE MILL' at jagatdal 24-Parganas
BHATPARA 81-2757/2758/2038

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध, अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

Founder: Late Sikhar Chand Churoria

Our Quality Product of Chanachur.
Anusandhan , Raja,
Rimghim, Picnic,
Subham, Bhaonagari Ghantia,

Manufactured By
M/s. K. C. C. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Pin - 742122
Dist: Murshidabad
Phone: Code: 03483 No.: 53232
Cal. Phone: No.: 033 2230 0432, 2522-1580

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of pumping stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbus would have feared to tread)

SPML

Engineering Life

SUBHASH PROJECTS & MARKETING LIMITED

113 Park street, Kolkata 700 016
Tel : 2229 8228, Fax : 2229 3882, 2245 7562
e-mail : info@subhash.com, website: www.subhash.com
Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Kolkata-700016 Ph:(033)2229-8228.
Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi-110 020
Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011) 684 6003. Regional Office: 8/2 Ulsoor Road,
Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15, Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
अर्थात् अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

	Phone:
Gram "GANGJUTMIL"	2226-0881
Fax: + 91-33-245-7591	2226-0883
Telex: 021-2101 GANG IN	2226-6283
	2226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 2634-6441/2644-6442
Fax: 2634 6287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.
(Formerly: Laxman Singh Jariwala)
Balwant Jain - Chairman

卐

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 2514-4496, 2513-1086, 2513-2203
Fax: 91-011-5131184
e-mail: laxmanjariwala@gems.vsnl.net.in

With Best Compliments..... ?

MARSON'S LTD

MARSON'S THE ONLY TRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPED TO MANUFACTURE 132 KV CLASS TRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence, Coal India, CESC, Railways, Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short Circuit test for Proven desing time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer
From 25 KVA to 50 MVA upto 132kv lever.
Current Transformer upto 66kv.
Dry type Transformer.
Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT
1, KYD STREET, KOLKATA - 700 016
PHONE: 2229-7346/4553, 2226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-225948/2263236

In

Loving Memory of their parents

Late, Shree Phool chandji Kharad

&

Late, Smt. Narangi Devi Kharad

卐

From :-

M/s Phool Chand Kharad & Sons

21, Kali Krishna Tagore Street

Kolkata - 700 007

Phone : 2233-1609, 2239-8628

शुभ कामनाओं सहित —

मनुष्य जीवन में ही सत्य कार्य करने का अवसर उपलब्ध होता है।

अहिंसा अमृत है, हिंसा विष है।

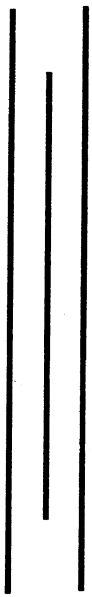

अनाम

अहिंसा ही परमफल है, परममित्र है, परम सुख है।
अहिंसा कायरों का नहीं वीरों का अस्त्र है।

卐

arcadia shipping limited

We Own & Operator tramp service on
-M.V.ARCADIA PROGRESS (35224 DWT)
Besides Owing & Operating 8 Self Propeled + 1 Dumb Barges
of between 550-1250 DWT.

We are Associates/General Agents in India for:
Winco Maritime Limited, London
-Puyvast Chartering BV., The Netherlands
-National Petroleum Construction Co., Abu Dhabi

******

We are agents at Mangalore for:
The Shipping Corporation of India Ltd.
(The Indian National Line)

******

Regd. & head Office:
222, Tulsiani Chambers Nariman point,
Mumbai-400 021.
Tel: 2831540/49, 2020416/418/2822765.
Fax: 2872664.
Tlx: 86567 ASPL IN / 83059 CONT IN, / CABLE: SHIPONTIME
E.Mail: vns@arcadiashipping.com

******

Offices at all major Indian Ports & New Delhi & Bangalore.

M.M. & P.O./W.B./R.N.P.-45/2003
Vol. XXVII, No. 2 TITTHAYARA May 2003
Registered with the Registrar of Newspapers for India
under No. 30181/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचानी चाहिये।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 666 7212/7225